नवीं पनीरी
भाग - 2
Bhai Vir Singh Sahitya Sadan
ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਤ ਸਦਨ

# नवीं पनीरी

*बाल कथाएँ गुरु नानक देव*

**भाग दूसरा**

भाई वीर सिंह साहित्य सदन
भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्किट
नई दिल्ली-110001
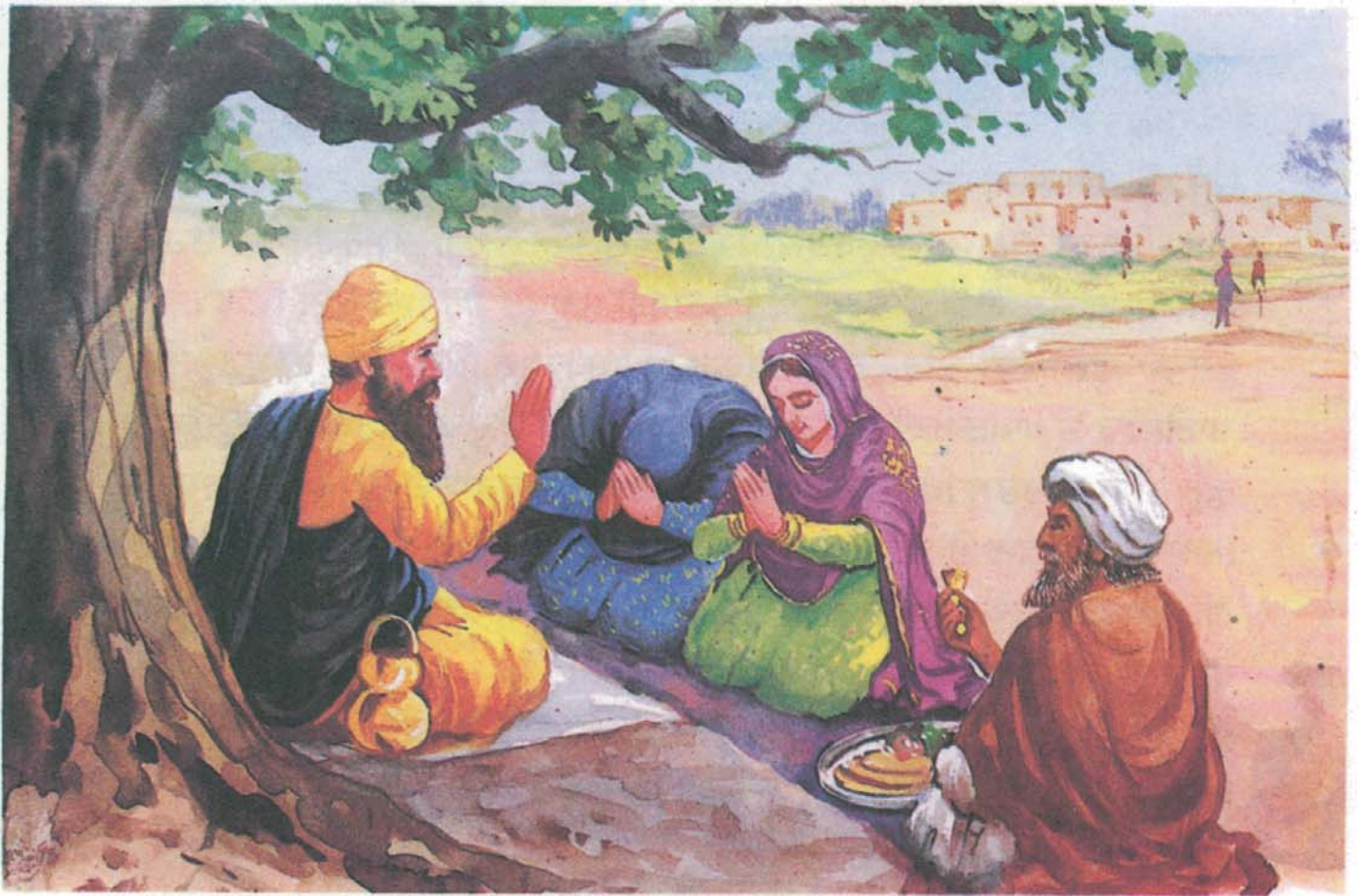
# माई वराई का प्रेम भरा भोजन

गुरु नानक देव जी मरदाने को साथ ले जब जगत सुधार के लिए निकले तो ब्यास नदी के दूसरी और स्थित नगर गोईंडवाल के बाहर एक पेड़ के नीचे रात बिताई। दूसरी रात खडूर पहुँच गए। यहाँ भी खुले आसमान के नीचे रात बिताई। अगले दिन मरदाने को बहुत भूख लगी। तभी चौधरी महिमे की पत्नी विराई एक अन्य औरत के साथ वहाँ से गुज़री। नूरानी चेहरा और दिल को बाँधने वाला कीर्तन सुन कर विराई ने आकर माथा-टेका। माथे को चरणों पर रखते ही शरीर व मन के अन्दर प्यार की एक झंकार उठी। उसने अपनी सहेली को घर भेजा जो स्वादिष्ट भोजन बना कर ले आई। मरदाने ने भोजन कर के कहा इतना स्वादिष्ट भोजन तो माता जी ही बनाती हैं। गुरू जी मुस्कुराते हुए बोले जैसे रोटी में घी रच बस जाता है उसी तरह प्यार भी वस्तुओं में बस जाता है और यह स्वाद उस प्यार का ही है। उसी दिन गुरू जी खडूर से अगले पड़ाव की और चल दिए।

# दुख भंजनी बेरी के नीचे कीर्तन

खडूर से चलकर गुरू नानक जहाँ अमृतसर शहर स्थित है वहाँ पहुँचे। उस समय यहाँ जंगल होता था। गुरू जी एक तालाब के किनारे बैठ गए। आजकल यह पेड़ दुखभंजनी बेरी व तालाब अमृत सरोवर के नाम से प्रसिद्ध है। इस तालाब के मध्य में स्वर्ण हरिमंदिर स्थित है। गुरू नानक बहुत दिन तक यहाँ रहे। रोज़ सुबह शाम कीर्तन होता रहा। लोग आसपास के गाँवों जैसे सुलतानविंड, तुंग, चाटीविंड और खापड़खेडी से कीर्तन सुनने के लिए आते। इसी जगह पर पहली बार गुरू नानक ने कड़ाह प्रसाद बनाने और बाँटने की विधि अपनाई। मरदाने के पूछने पर आपने यह भी कहा कि इस जगह पर तो सुबह से शाम तक कीर्तन हुआ करेगा और सारा दिन प्रसाद बाँटा जाएगा। उनकी यह भविष्यवाणी बाद में सत्य सिद्ध हुई।
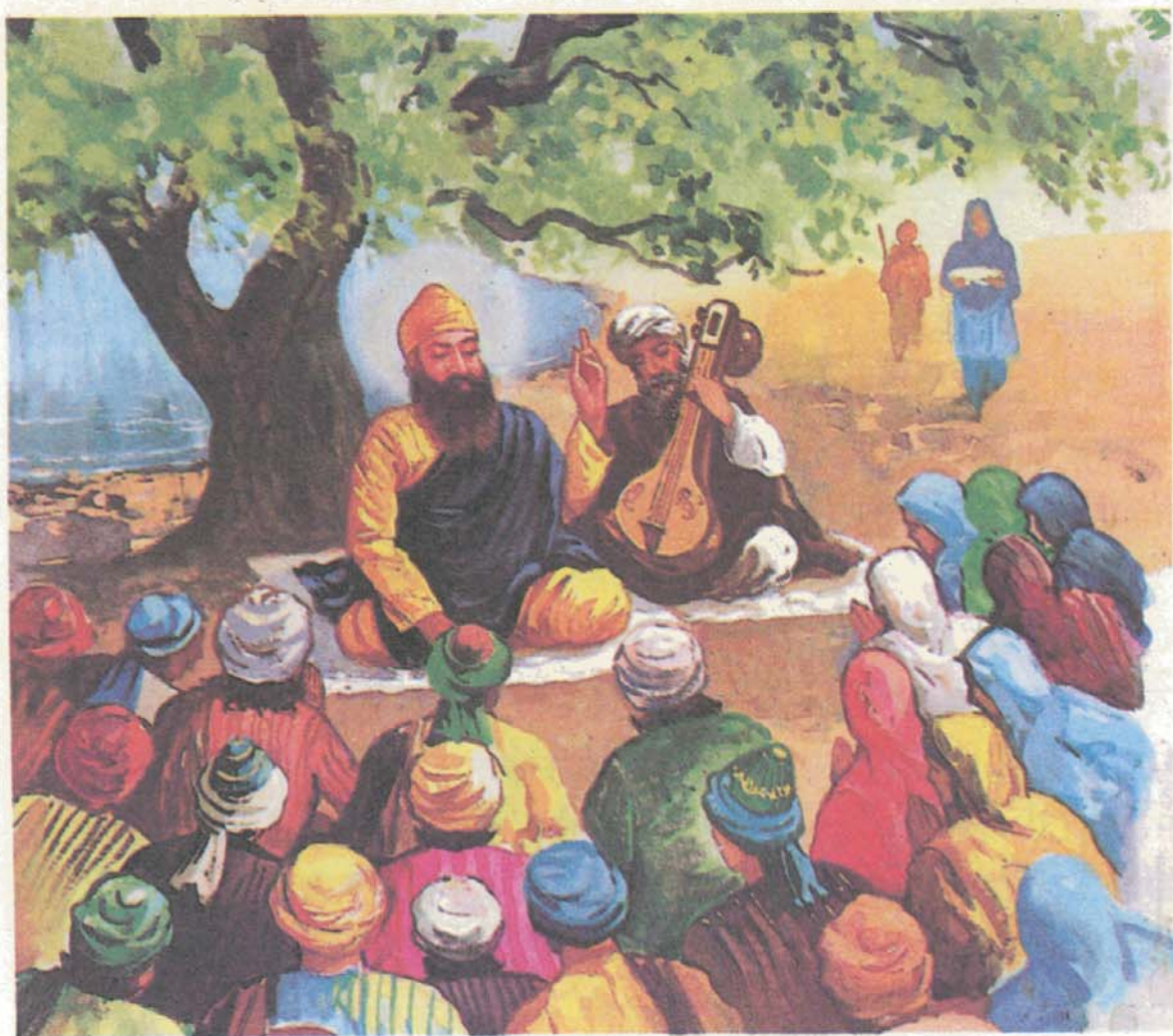
# भली कमाई बुरी कमाई

जंगल में कुछ दिन बिताने के बाद गुरू नानक देव जी लाहौर होते हुए अमीनाबाद पहुँचे। उस समय अमीनाबाद का नाम सैदपुर संडियाली था। बाबर के हमले के बाद यह शहर अमीनाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ पहुँच कर गुरू नानक सीधे भाई लालो के कच्चे मकान के आगे जा कर खड़े हो गए। भाई लालो बड़ई था और मेहनत की कमाई खाता था। सदा ईश्वर को याद रखने वाला भक्त था। उसकी पूर्ण गुरू के दर्शन करने की प्रबल इच्छा थी। इसलिए सबके दिलों की जानने वाले गुरू नानक ने सीधा उसके घर के आगे जाकर आवाज लगाई। 'धन्य निरंकार'। लालो बाहर आया तो गुरू नानक ने कहा 'लो भाई लालो हम आ गए हैं।' भाई लालो दर्शन करके निहाल हो गया। उन्हें आदर सत्कार के साथ अपने घर ले गया। मरदाना हैरान था कि यह कहाँ आ गए। घर में न तो चारपाई है और न ही बैठने को पीढ़ी।

लालो बाहर से एक चारपाई ले आया। बड़े प्यार और सत्कार से गुरू जी को उस पर बैठाया। लालो रसोई में भोजन तैयार करने गया तो मरदाने ने पूछा दाता, यह कौन है जिसके घर आप इतनी दूर चलकर आए हो। गुरू जी ने हंसकर कहा 'हम भक्ति के घर आए हैं जहां धर्मानुसार काम हो रहा है व ईश्वर की उपस्थिति का भी आभास है।

लालो भोजन तैयार कर के ले आया। बाजरे की रोटी व साग, मरदाना घबराया कि यह सूखी रोटी कैसे निगलेगी। पर जब गुरू नानक को खाते हुए देखा तो हौंसला बंधा कि अगर उन्हें स्वादिष्ट लग रही है तो मैं क्यों नहीं खा सकता। और सचमुच मरदाने को उस रोटी में बहुत स्वाद आया। जैसे जैसे गुरू जी रोटी खाते गए लालो के मन को अथाह शांति और संतोष मिलता गया।

तीन दिन रहने के पश्चात् गुरू जी जब वहां से चलने लगे तो लालो ने विनती की कि कुछ दिन और वहीं रहें। गुरू जी ने उसकी यह बात मान ली। रोज सुबह
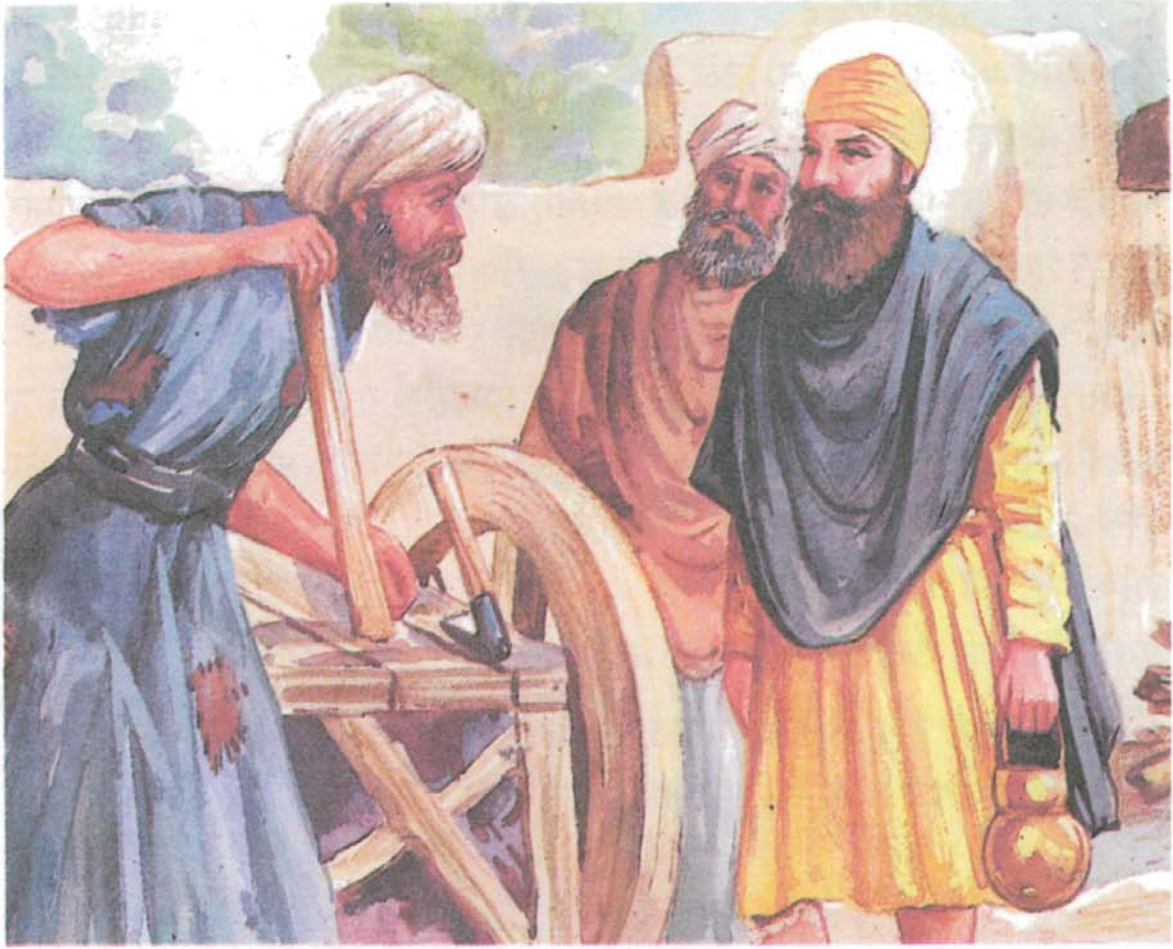
गुरू जी पत्थरों के ढेर पर बैठ जाते और प्रभु सिमरन में लीन हो जाते। इसी स्थान पर बाद में गुरूद्वारा रोड़ी साहिब स्थापित हुआ। इसके निकट ही भाई लालो का कुआं है। हिन्दु गुरू नानक को तपस्वी नानक और मुसलमान नानक शाह फकीर पुकारने लगे।

अमीनाबाद के पठान हाकिम के एक सरदार मलिक भागो ने ब्रह्म भोज दिया और सभी साधु संतों को उसमें आमंत्रित किया। उसने गुरू नानक को भी निमंत्रण भेजा पर वे न गए। मलिक भागो ने गुस्से में बहुत से लोगों को उन्हें लिवाने भेजा। जब गुरूजी आए तो उन्हें गुस्से से बोला हे तपस्वी, तुम गरीब शूद्र के घर रोटी खा सकते हो पर मेरे बुलाने पर नहीं आ सकते। मिरासी को साथ लिए घूमते हो। गुरू जी ने उत्तर दिया ईश्वर की रजा में रहते हैं जहां देता है वहीं खा लेते हैं मलिक भागो उनके इस उत्तर से संतुष्ट न हुआ तो गुरू नानक ने लालो को

अपने घर से बाजरे की रोटी लाने को कहा और मलिक भागो के घर से भी पूरी और कचौरी मंगवा ली। दोनों हाथों में दोनों भोजन ले कर दबाए व निचोड़े। अरे! यह कुदरत की कैसी निराली शान: लालो की सूखी रोटी में से दूध की बूंदें निकली और मलिक भागो के पकवानों में से खून टपकने लगा। सब लोग हैरान हो गए। मलिक भागो को गुस्सा आ रहा था मगर साथ में वह शर्मिंदा भी हो रहा था। गुरू नानक देव जी ने उसे समझाया कि नेक व मेहनत की कमाई दूध जैसी शुद्ध व पवित्र होती है लेकिन गलत तरीके से कमाया गया पैसा खून के बराबर होता है। इसमें उन गरीबों का खून है जिनका हक तुम मार रहे हो हम बुरी कमाई से तैयार भोजन नहीं खा सकते इसीलिए मना कर रहे थे।

यह कह कर गुरू नानक बाहर आ गए और फिर से भाई लालो के घर जा कर रहने लगे। इस घटना के बाद बहुत से हिन्दू व मुसलमान गुरूजी के श्रद्धालु बन गए।
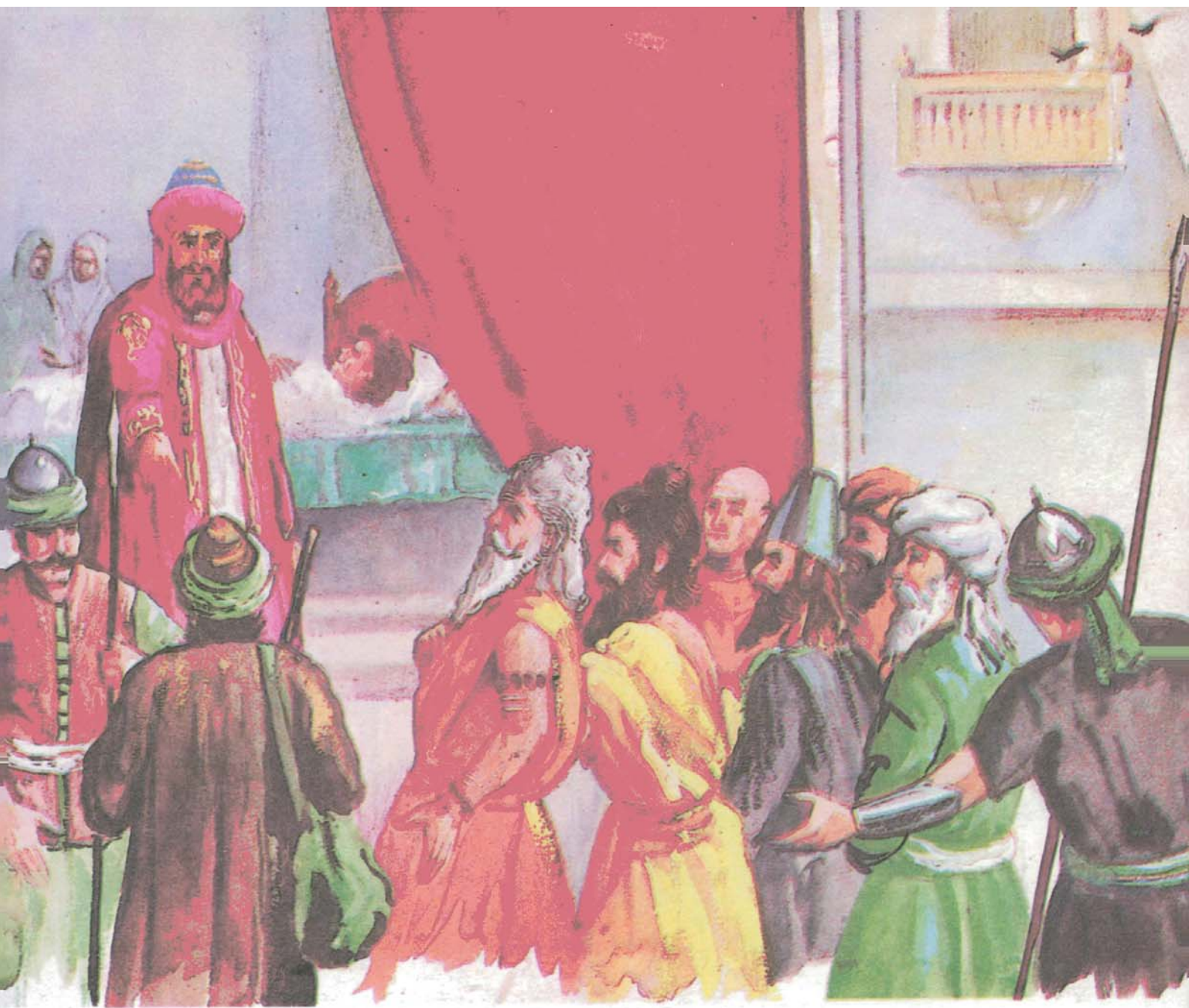
## बन्दी फकीरों को रिहा कराया

अमीनाबाद में रहते हुए ही एक और ऐसी घटना हो गई जिससे गुरू नानक की और भी प्रसिद्धि हो गई। इस नगर के पठान हाकिम का बेटा बहुत बीमार हो गया और कोई भी हकीम वैद्य उसे ठीक न कर सका। आखिर में मलिक भागो ने सलाह दी कि यह बालक किसी पहुँचे हुए फकीर की प्रार्थना से ही ठीक होगा। अब पहुंचा हुआ फकीर कहां से मिले? आखिरकार सब फकीरों सन्तों को पकड़ कर लाया गया जिनमें गुरू नानक भी थे। पठान हाकिम ने सब से कहा कि जब तक मेरा पुत्र ठीक नहीं हो जाता तब तक किसी पीर फकीर को रिहा नहीं किया जाएगा। यह सुनकर सब सकते में आ गए।

इस समय गुरूजी ने मुस्कुरा कर कहा कि फकीरों से आशीषें लेने और बेटे को ठीक कराने का यह ढंग गलत है। ऐसे तो बद्दुआएं ही मिलती हैं। उसको और समझाया तो उसने सब संत फकीर रिहा कर दिए। गुरू नानक ने फिर कहा कि इसे किसी महापुरूष की जूठी रोटी खिलाओ। यह ठीक हो जाएगा। पठान ने लालो की जूठी रोटी बेटे को दी और वह ठीक हो गया। पठान बहुत खुश हुआ और गुरु नानक का सेवक बन गया। गुरु जी ने उसे समझाया कि जब तक तेरे अन्दर अहंकार था प्रार्थना भी तेरा भला नहीं कर सकती थी। अहंकार छोड़ा और पुत्र को जूठी रोटी तक खिलाई और वह ठीक हो गया। इन सन्तों फकीरों को गिरफ्तार करके तूने इनका अपमान किया है इनसे क्षमा मांग और सब को अच्छी

अच्छी वस्तुएं दे कर विदा कर। उसने इसी तरह किया। मलिक भागो दूसरी बार कौतुक देख रहा था। इसलिए वह भी चरणों में गिर पड़ा। वह शर्मिंदा था क्योंकि उसनें यह सलाह गुरू नानक को फंसाने के लिए दी थी और उनकी एक और जीत हो गई। उसने अपनी भूल पर अफसोस प्रकट किया। गुरू नानक ने उसको फिर उपदेश दिया कि लोगों को ठगना, लूटना और फिर उस बुराई कमाई पर सांप की तरह बैठ जाना गलत काम है। सरदार हो कर लोगों के साथ इन्साफ करना, और किसी का हक न मारना तेरी नेक कमाई होगी। फिर गुरू नानक ने उसे ईश्वर के संबंध में बातें बताई, नाम सिमरन की महानता समझाई और सच का ज्ञान कराया। उसने अपना इकट्ठा किया धन तुरंत गरीबों में व उन लोगों में बांटने का फैसला किया जिनसे वह धन लूटा था। आप गुरू का सिक्ख बन गया। अपना बाकी का जीवन उसने गुरूजी के बताए तरीके से व्यतीत किया।

इस दौरान मरदाना छुट्टी लेकर तलवंडी गया हुआ था। उसने वापिस आ कर बताया कि वहां सब लोग उन्हें बहुत याद करते हैं। खासकर राय बुलार उनसे मिलने को बहुत व्याकुल है। गुरू नानक ने तलवंडी जाने का विचार बना लिया।

# गुरू नानक तलवंडी में

जब गुरू नानक तलवंडी पहुंचे तो घर जाने के स्थान पर नगर के बाहर कुएं पर डेरा लगा लिया। सब तरफ बात फैल गई कि महिता कालू राम का बेटा संत नानक बन कर आया है। माता तृप्ता को खबर पहुँची तो वह दौड़ी दौड़ी आई और नानक को गले से लगा कर खूब रोई। पिता महिता कालू राम व चाचा लालू राम भी आए। मिलने पर बहुत जोर लगाया कि घर चलें पर वे न माने।

जब यह खबर आई कि राय बुलार ने याद किया है तो झटपट वहां जाने को तैयार हो गए। उन्होंने कहा कि वह तो मिलने ही राय बुलार से आए हैं। जब राय बुलार के घर पहुंचे तो उसने उनका बहुत आदर सत्कार किया। बातों के दौरान उनसे पूछा कि ईश्वर के सन्मुख माफी कैसे मिलती है? कैसे बख्शे जाते हैं?

गुरू जी का उत्तर था कि आप तो पहले से ही बख्शे हुए हो। राय बुलार की आंखे प्यार व श्रद्धा से भीग गई। वह जमीन पर बैठ गया और गुरू नानक के चरणों में सिर रख दिया फिर अपने नौकर को भेजकर ब्राह्मण रसोइए को भुला भेजा कि बढ़िया भोजन बनाए। नानक जी सहित सभी लोग यहीं भोजन करेंगे।

उन्होंने फिर गुरू नानक से विनती की कि आप यहीं रहो। यहां आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। मेरी सारी ज़मीन जायदाद आपके लिए हाजिर है जिस प्रकार चाहें इसे इस्तेमाल करें।

गुरू नानक ने कहाः हमने वही सब करना है जो ईश्वर को अच्छा लगे। जहां वह ले जाएगा वहीं जाएंगे। जहां रखेगा वहीं रहेंगे। राय बुलार समझ गया कि वह तलवंडी में नहीं रहेंगे। उसने फिर प्रार्थना की कि कुछ दिन तो यहां ठहरें और
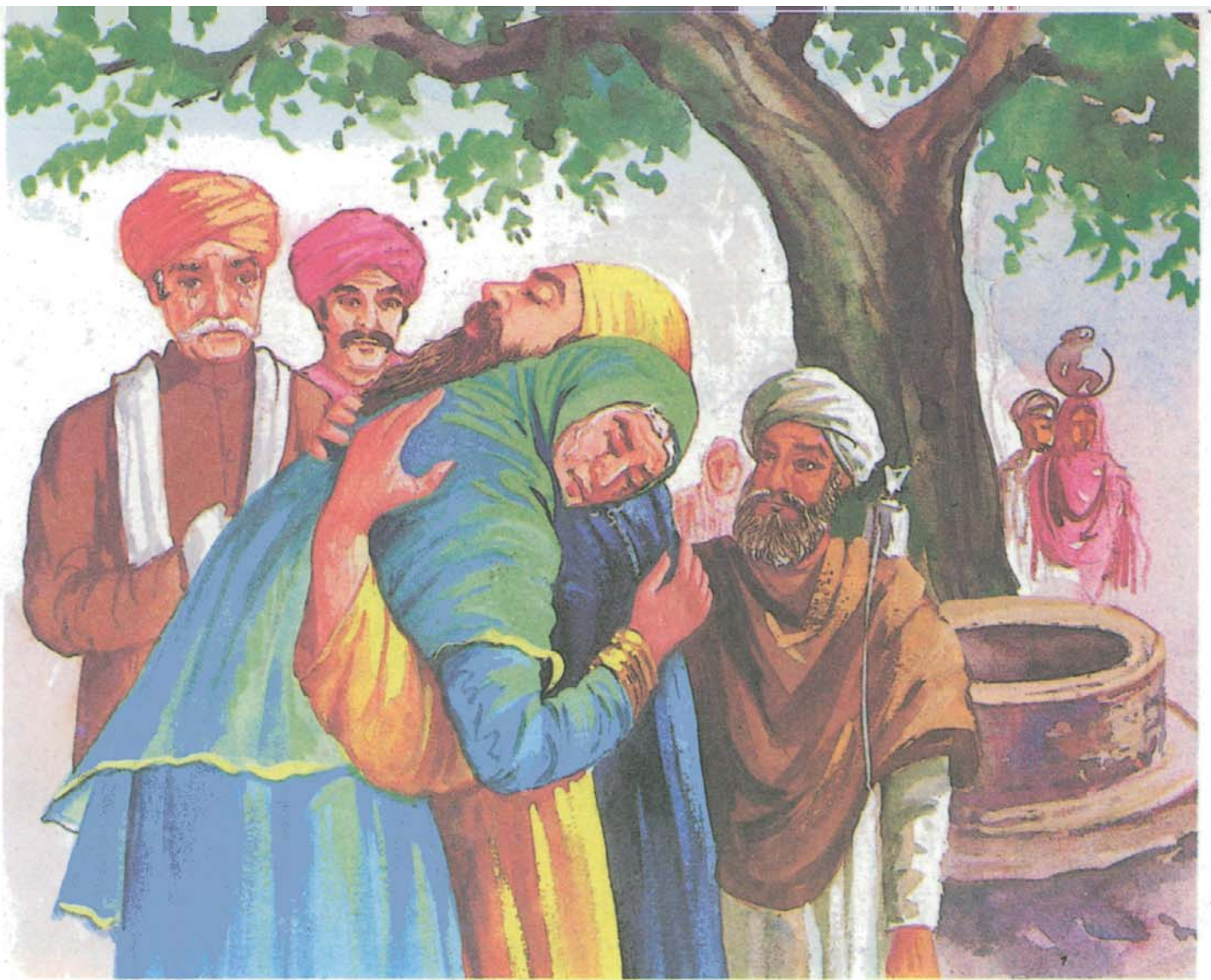
घर जा कर परिवार को भी खुश करें। गुरू जी ने उनकी यह प्यार भरी प्रार्थना मान ली।

गुरू जी रातें बाहर पेड़ों के नीचे ही गुजारते और दिन में इधर उधर घूमते रहते। दिन में एक बार राय बुलार को जरूर दर्शन दे आते। भोजन के समय अपने पिता के घर पहुंच जाते और माता तृप्ता के हाथ की बनी रोटी खाते। उन्होंने तलवंडी में रहते हुए सारे दिन यूं ही व्यतीत किए। गुरू जी को खुले पानी में स्नान करने का शौक था। जब राय बुलार को पता चला तो उसने जल्दी ही एक तालाब खुदवा दिया। उसी कच्चे तालाब ने अब एक सरोवर का रूप धारण कर लिया है। कुछ दिन तलवंडी रहने के बाद आप आगे यात्रा को चल दिए।

# अनावश्यक वस्तुएं नहीं उठाईं

गुरू नानक देव जंगलों, पहाड़ों, नदियों को पार करते हुए कई दिन के सफर के पश्चात हड़प्पा पहुंचे। नगर के बाहर एक पेड़ के नीचे जा बैठे। मरदाने से कहा कि नगर में जाए परन्तु किसी से कुछ न मांगे। लोग उसे पहचान कर अपने आप उसका सत्कार करेंगे। मरदाना हैरान कि बिना मांगे ही लोग कैसे दे देंगे? पर जब वह नगर में पहुंचा तो ठीक वैसा ही हुआ जैसा गुरू नानक देव जी ने कहा था। लोगों ने उसका खूब आदर सम्मान किया। खाने पीने को बहुत कुछ दिया फिर लोगों ने उसे अनेक कपड़े लत्ते, रूपया और मोहरें भी दी। ये सब देखकर मरदाना बहुत खुश हुआ। कुछ लोगों ने उसकी बिल्कुल भी परवाह न की। उनके व्यवहार से मरदाना बहुत दुखी भी हुआ।

जब मरदाना सारे सामान के साथ गुरू नानक जी ने पास पहुंचा तो वह मुस्कुरा दिए और कहने लगे 'यह किसलिए उठा लाए? ये तो हमारे किसी काम की नहीं। इन्हें फेंक दो' मरदाने ने आज्ञा मानी और सारा सामान फेंक आया। उसको समझ में आ गई कि अनावश्यक वस्तुओं का बोझ सफर में नहीं उठाना चाहिए।
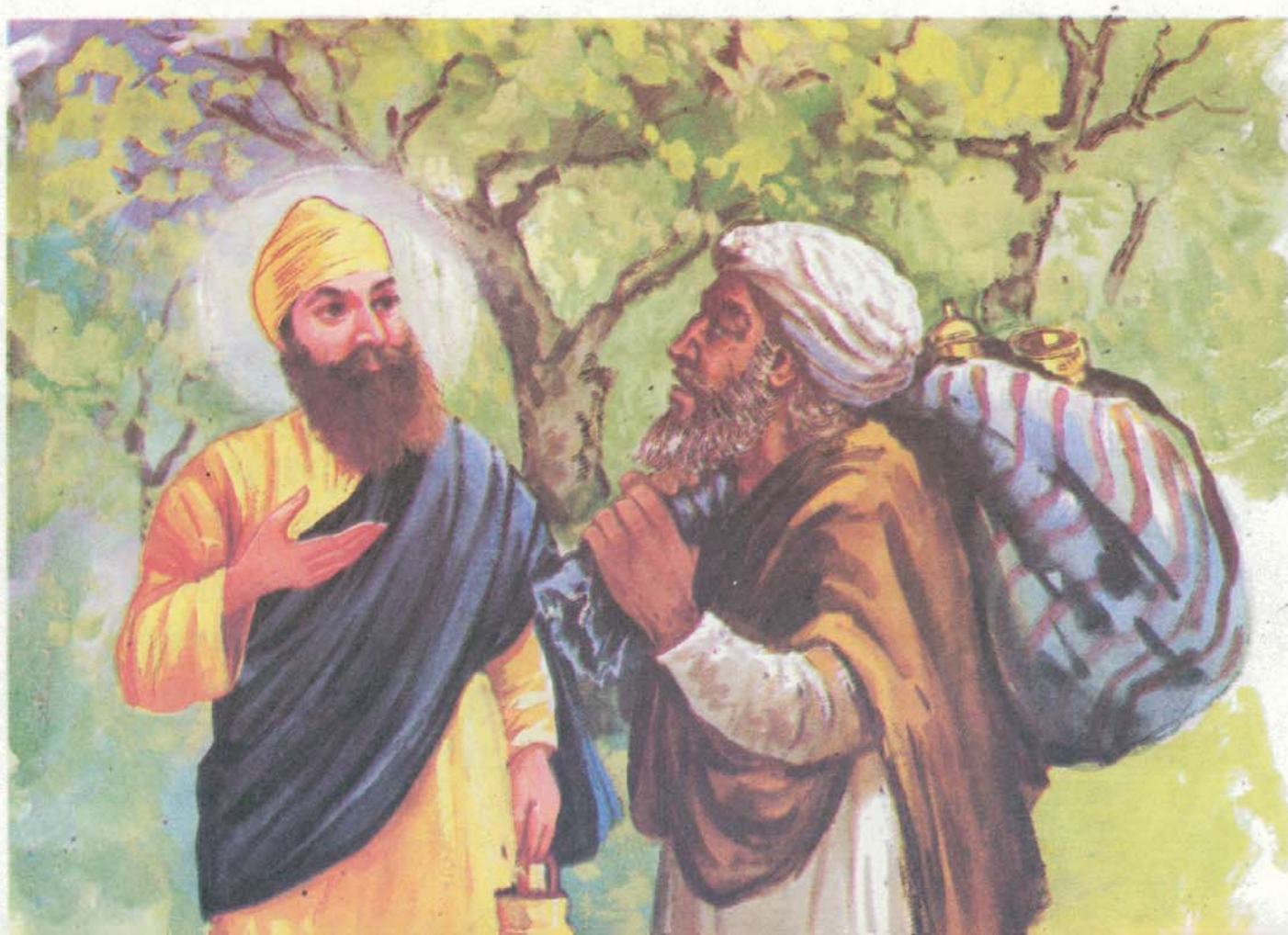
## सज्ञन ठग से मुलाकात

हड़प्पा से गुरू जी तुलंभा पहुंचे। वहां नगर के बाहर उन्होंने एक बड़ी हवेली देखी। हवेली के अन्दर घुसते ही एक ओर मंदिर और दूसरी ओर मस्जिद थी। यह एक सराय थी जिसके मालिक का नाम सज्ञन था। वह यात्रियों पर अपने धर्मी होने का प्रभाव डालता था और उनकी खूब सेवा भी करता था। हर समय उसके हाथ में माला होती थी जिसे जपने का वह ढोंग करता रहता था। रात्रि में इन यात्रियों को लूट कर उनका खून कर के उन्हें कुएँ में फेंक देता या दबा देता। गुरूजी सब कुछ जानते हुए भी उसकी सराय में जाकर ठहर गए। स्वभावानुसार
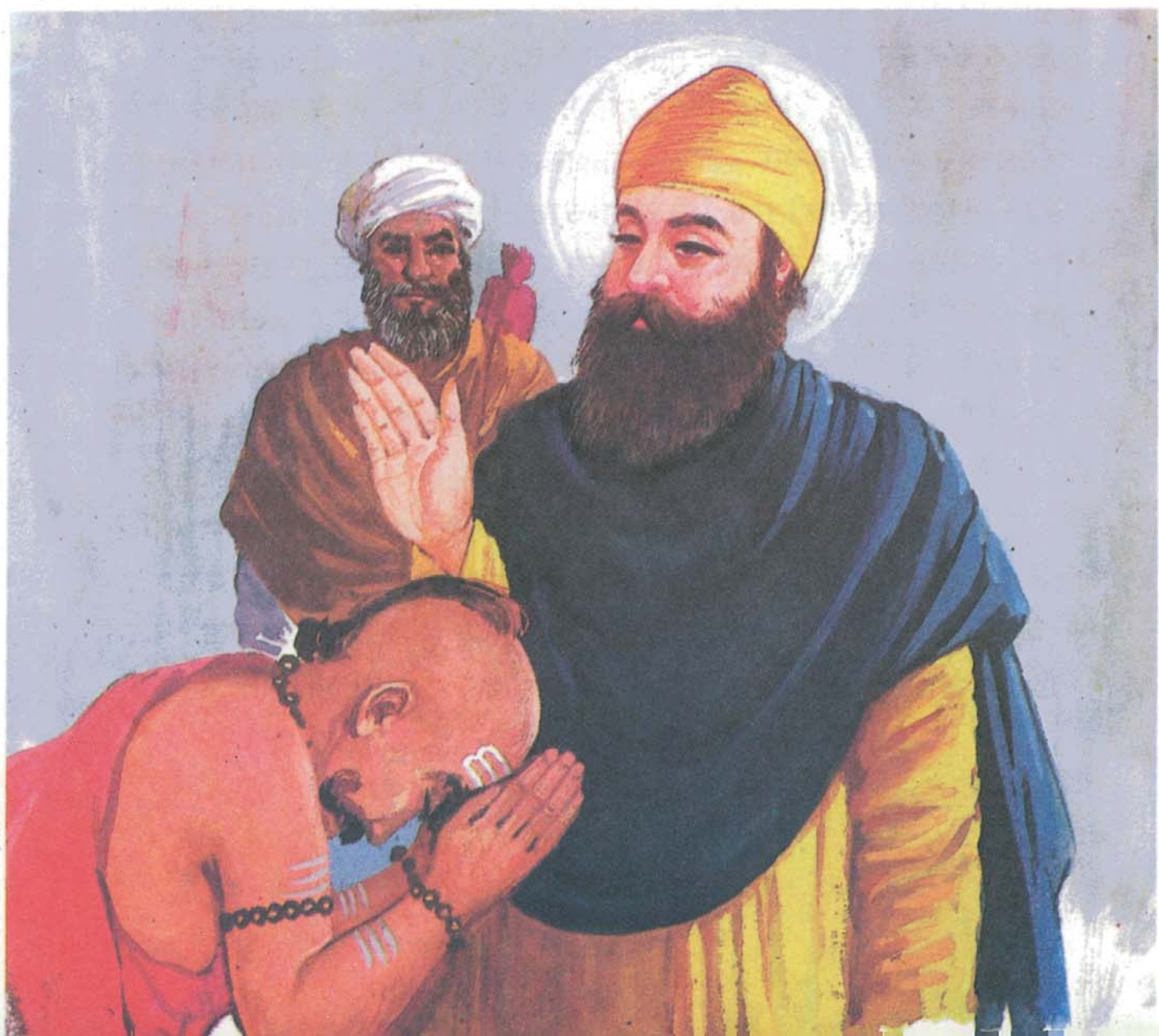
उसने बहुत आदर सत्कार किया। उसने सोचा कि यह प्रभाव वाला कोई अमीर आदमी लगता है और उसकी पोटली में जरूर हीरे जवाहरात होंगे।

बहुत रात हो गई लेकिन गुरू नानक देव जी सोने ही न गए। सज्जन ने बहुत कहा कि अब काफी रात हो गई है आपके लिए बिस्तर लगा दिए हैं जा कर सो जाओ। गुरू जी ने उस से कहा कि यह आखिरी शब्द गा कर सोने चले जाएँगे। उन्होंने मरदाने से रबाब बजाने को कहा और स्वयं कीर्तन शुरू कर दिया। सज्जन वहीं बैठा कीर्तन सुनता रहा। धीरे-धीरे कीर्तन का ऐसा प्रभाव उस पर पड़ा कि उसे अपने पापों का एहसास होने लगा। उसे अपने आप पर बहुत शर्मिन्दगी हुई। वह समझ गया कि यह कोई व्यपारी या धनी नहीं है बल्कि ईश्वर का रूप हैं।

यह बात समझ कर वह उनके चरणों पर गिर गया और माफी माँगने लगा। उसने अनुनय किया कि उसके गुनाह माफ कर दिए जाएँ। गुरू नानक ने कहा कि गुनाह माफ हो सकते हैं यदि पश्चाताप किया जाए और सत्य मार्ग पर चला जाए। कसम खाओ कि फिर कभी ऐसा पाप नहीं करोगे। जो धन इस गलत तरीके से इकट्ठा किया है उसे वापिस कर दो। बुरी कमाई घर में मत रखो नहीं तो दुखी रहोगे। सज्जन ने ऐसा ही किया। जब सारा धन घर से निकाल दिया तो गुरू जी ने उसे शिक्षा दी कि अब तेरे मन को शांति मिलेगी। तू इस मंदिर और मस्जिद को सचमुच का धर्म मन्दिर बना। नाम जप और मेहनत कर। तुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी और तेरे मन की भटकन भी नहीं रह जाएगी। सज्जन ठग था। गुरू नानक ने कीर्तन से उसकी सोयी हुई अच्छाई जगा के सज्जन भक्त बना दिया।

# पीर को राह दिखाई

सज्जन ठग को भक्त बना कर और बुरे कामों से हटाकर दो तीन दिन बाद गुरू नानक देव जी एक ऐसे गाँव में पहुँचे जहाँ एक पीर लोगों को बहुत तंग कर रहा था। गुरू जी ने गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे डेरा जमाया। कीर्तन से खिंचा सारा गाँव वहीं दर्शनों के लिए आया। पीर गुस्से में आ गया कि उससे भी बड़ा यह कौन है। गुरू नानक के बारे में सुन कर उनके पास आया और पूछा कि कहाँ से आए हो और किधर जाओगे? गुरू जी ने उत्तर दिया    हवा एक ओर से आती है और दूसरी ओर निकल जाती है। हमें भी हवा की तरह चलने का हुक्म है। पीर ने फिर पूछा कि सुना है आप यहाँ स्थाई रूप से रहेंगे। तब गुरू जी ने कहा
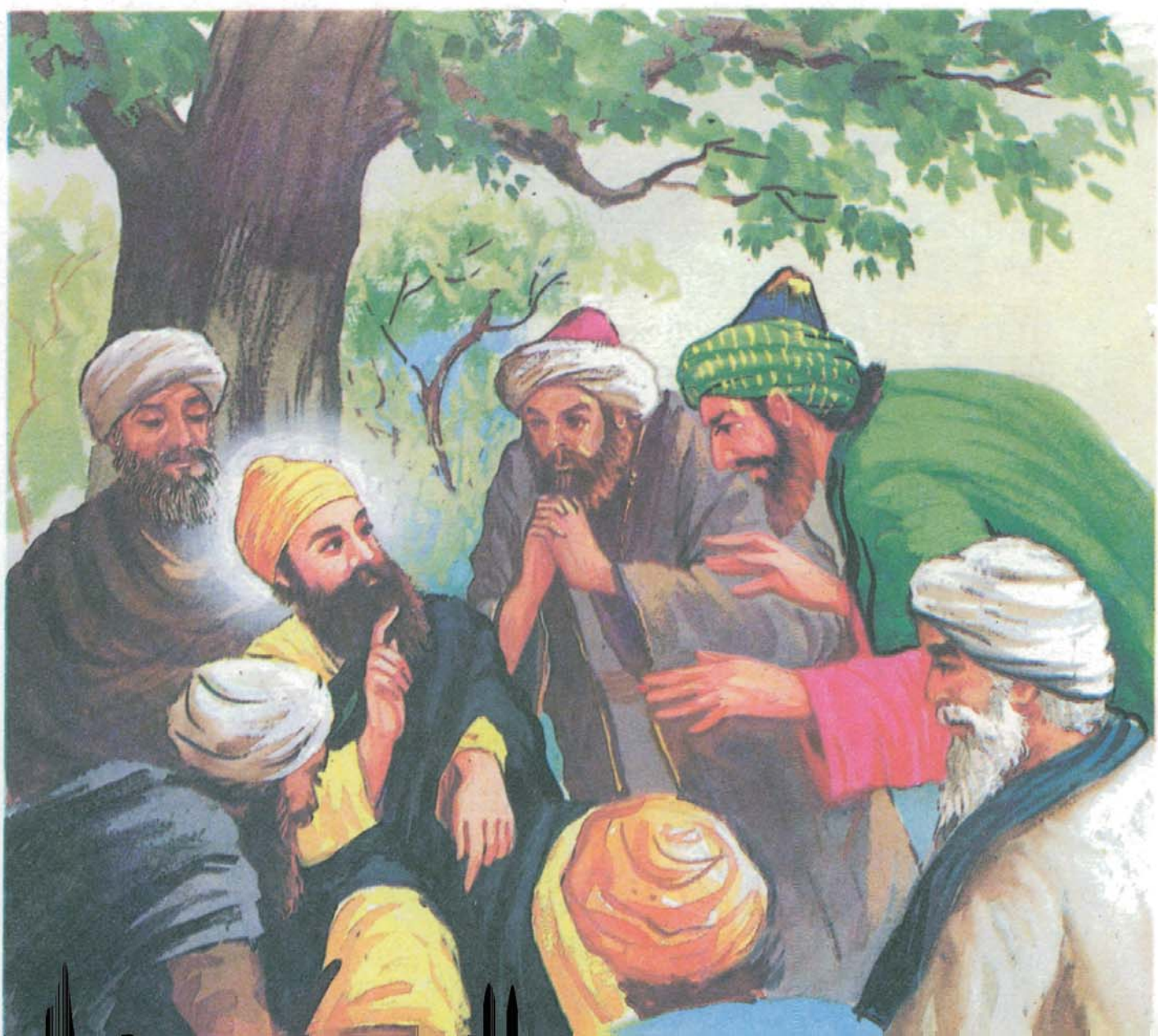
कि फकीर का घर तो ईश्वर के चौबारे पर है। बाकी चौबारा डालेंगे या गिराएँगे यह पता नहीं। उन्होंने समझाया कि मनुष्य मिट्टी का बना है इसलिए मिट्टी से प्यार है शरीर में आत्मा है जिससे शरीर का मूल्य है किन्तु मनुष्य आत्मा की कद्र नहीं करता, आत्मा के साथ प्यार नहीं करता। प्यार उससे करता है जो नश्वर है।

पीर को समझाया कि चौबारे का मान मत कर जब मर गए तो चौबारा किस काम का? किसी चौबारे में नहीं रहना। धरती पर भी नहीं रहना। शरीर तो कब्र में दफन हो जाएगा। सारी उम्र यह नहीं सोचा कि आत्मा परमात्मा तक कैसे पहुँचेगी। मिट्टी का प्यार मिट्टी में ले जाता है। चौबारा उल्ट कर कब्र बन जाता है।

गुरू नानक की सच्ची और प्यार भरी बातें सुनकर पीर को होश आई। उसके मन में जब ज्ञान का दीया प्रज्ज्वलित हुआ तो उसे अपने बुरे कामों की सुध आई। उसने गुरू जी से कुछ दिन वहीं रहने की विनती की। उनका श्रद्धालु बन गया। गुरू नानक देव जी और कुछ दिन के लिए वहाँ रूक गए। पीर का सारा अहंकार जाता रहा। उसे जीवन का सही ज्ञान हुआ। उसने नाम जपना शुरू कर दिया और सचमुच का संत बन गया। उसे यह भी समझ आ गई कि सभी ईश्वर के बनाए बन्दे हैं और ईश्वर से प्यार करने वाला उसके बनाए बन्दों को दुख नहीं दे सकता। जो लोगों को दुखी करे ईश्वर उस से कभी खुश नहीं होता। गुरूजी की कृपा से वह अहंकारी लोगों को तंग करने व डराने वाला पीर असली संत, फकीर में बदल गया। उसके सुधरने से सारे इलाके के लोगों का भला हो गया और सब गुरू के श्रद्धालु हो गए।

# गुरू जी हरिद्वार में

हरिद्वार गंगा किनारे स्थित वह तीर्थ स्थान है जहाँ देश भर से लोग आ कर स्नान करते हैं और श्रद्धा रखते हैं। धारणा है कि गंगा स्नान से पाप धुल जाते हैं। गुरू नानक लोगों को सच समझाने के लिए हरिद्वार पहुँच गए। एक सुबह गुरू जी गंगा किनारे पहुँच गए। वहां क्या देखा कि लोग स्नान करके सूरज की ओर पानी फेंक रहे हैं, गुरु जी ने पूर्व की ओर पीठ कर ली और पश्चिम की तरफ पानी फेंकने लगे।
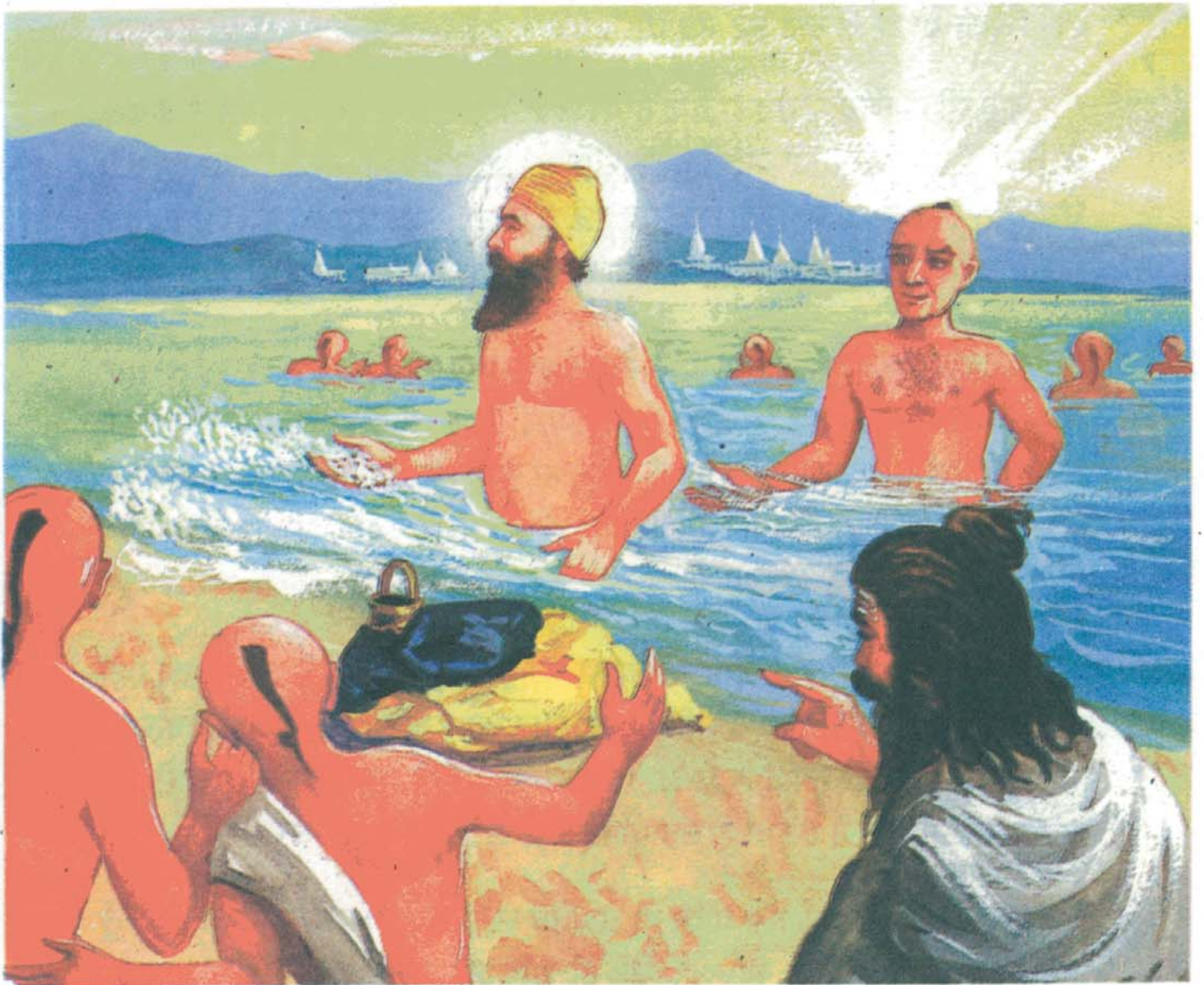
लोग हैरान हुए। हिन्दू तो पूर्व की और पानी फेंकते हैं यह पश्चिम की और क्यों दे रहे है। कुछ लोगों ने आकर मना किया और पूर्व की और जल चढ़ाने को कहा। गुरू नानक ने इक्ट्ठी हुई भीड़ की और देखा, फिर पुछा  आप लोग पूर्व की और पानी क्यों डाल रहे हो?  कुछ लोगों ने उत्तर दिया,  अपने पूर्वजों को पानी दे रहे हैं।

गुरू जी ने बड़ी शान्ति व सहजता से पूछा "सूरज और पूर्वज यहां से कितनी दूर हैं?"

लाखों करोड़ों मील एक वृद्ध ने उत्तर दिया। फिर तुरंत पूछा "आप पश्चिम की ओर पानी कहां फेंक रहे हो?"

गुरू जी ने कहा "करतार पुर रावी के किनारे मेरे खेत हैं इस बार वर्षा न होने के कारण सूख गए हैं। मैं उन्हें ही पानी दे रहा हूँ। अगर पहुँच गया तो फसल बच जाएगी।" लोग हँसने लगे। एक आदमी ने कहा  "आपका यह हाथ में लिया पानी गंगा ही में गिर रहा है। खेतों में कैसे पहुँचेगा?"

गुरू जी ने मुस्कुरा कर जवाब दिया "अगर तुम्हारा फेंका पानी लाखों करोड़ों मील ऊपर पूर्वजों को पहुँच सकता है तो मेरा ढाई तीन सौ मील क्यों नहीं जा सकता।"लोगों को बात समझ में आ गई। एक बजुर्ग ने कहा यह आदमी देवता है जो हमें सही राह बताने आया है।

इस प्रकार गुरू नानक देव जी ने हरिद्वार में एकत्रित भीड़ को सत्य का मार्ग दिखलाया। प्रभु परमात्मा से प्यार करना सिखाया।

गुरू नानक देव जी को सच पसंद था। वह पाखंड के विरूद्ध थे। जहां भी लोगों का गलत राह पर चलते देखते वहीं उन्हें जीवन का सच समझाते।

# कुरूक्षेत्र में भ्रम दूर किया

हरिद्वार से गुरू नानक कुरूक्षेत्र पहुँचे। उस समय वहां सूर्य ग्रहण का मेला लगा हुआ था। लोगों की सूर्य व चन्द्र ग्रहण के बारे में बहुत सी गलत धारणाएं थी। कहा जाता था कि इस समय तीर्थ पर स्नान करते हैं, दान पुण्य करते हैं। धारणा थी कि ऐसा करने से राक्षसों का हमला टल जाता है। यह विचार सत्य नहीं था। और यही समझाने गुरू नानक कुरूक्षेत्र पहुँचे। नगर के बाहर खुली जगह पर कीर्तन शुरू कर दिया।

इसी समय हांसी का राजा जगत राय अपनी मां के साथ वहां से गुजरा। राजा जगत राय अपना राज खो बैठे थे और आर्शीवाद लेने कुरूक्षेत्र आए थे। कीर्तन सुन पास आ कर बैठ गए। गुरू जी का नूरानी चेहरा, प्रभाव और कीर्तन सुन कर उसे यकीन हो गया कि यही सबसे बड़े महापुरूष हैं। उसने पास ही में अपना डेरा जमाया और अपने रसोईए से हिरन पकाने को कहा जिसे वह रास्ते में शिकार कर के ले आया था।
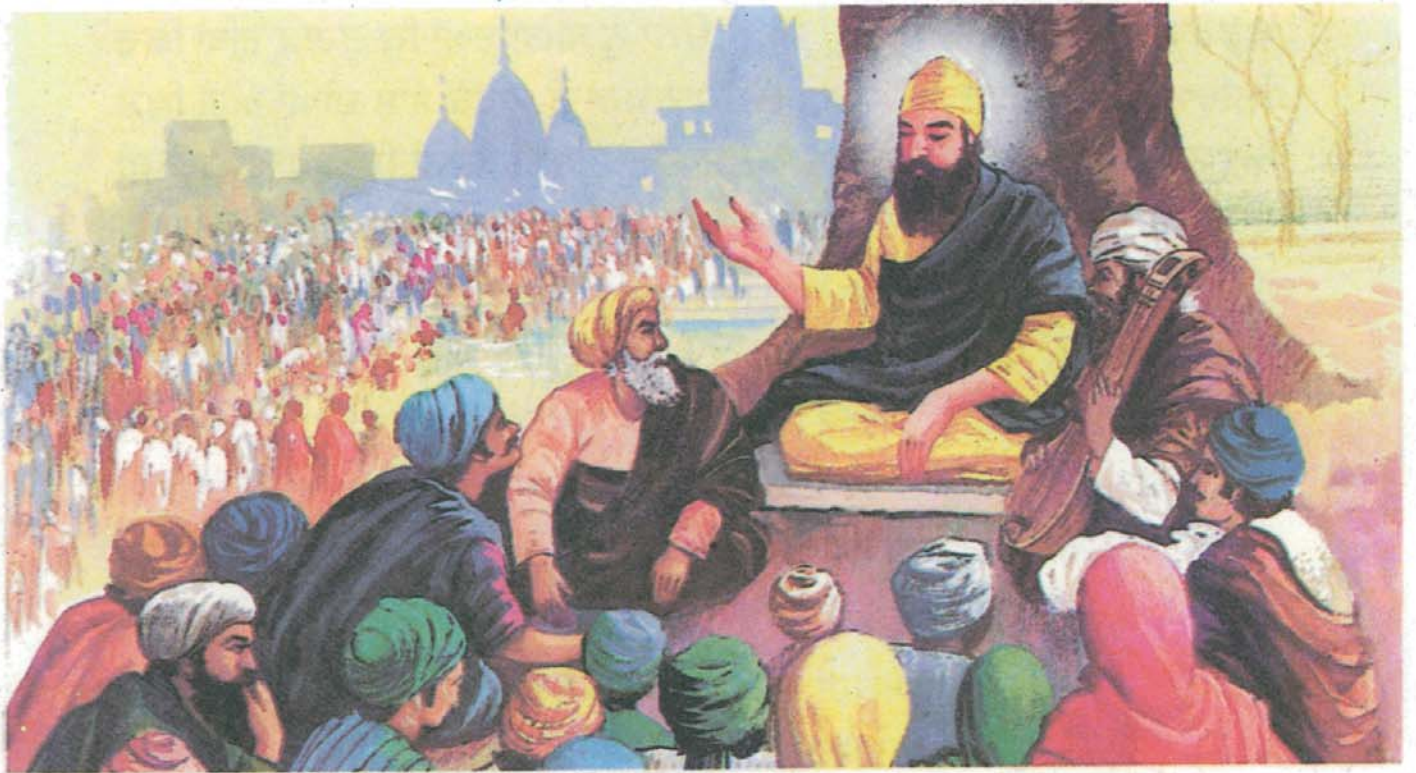
सूर्य ग्रहण के समय लोग व्रत रखते हैं और मांस पकाना तो पाप समझते हैं। जब लोगों ने धुँआ उठता देखा तो शोर मचा दिया कि ग्रहण के समय रसोई कौन बना रहा है? जब पता लगा कि मांस पक रहा है तो लोग गुस्से में आए और राजा जगत राय को मारने दौड़े। जब उन्होंने देखा कि रसोई गुरू नानक के पास जल रही है तो उन्होंने सोचा कि यह कुकर्म इन्होंने ही किया है। सब लोग उन्हें मारने दौड़े। गुरू जी ने शांत चित्त उत्तर दिया कि यदि ग्रहण में भोजन बनाना पाप है तो हमें मारना कैसे पुण्य होगा? यदि पशु को मारना पाप है तो मनुष्य को मारना पुण्य नहीं हो सकता। उनके दलील भरे उत्तर सुनकर लोग शांत हो गए।

गुरू जी ने कहा कि यदि किसी ने दलील के साथ वार्तालाप करना है तो अपने पंडितों विद्वानों को बुला लाए। अनेक पंडित आ गए। इनमें एक पंडित नानू भी था। जिसने अपना नाम नानक रखा हुआ था। वार्तालाप शुरू हुआ। पंडितों ने कहा कि हमारे शास्त्रों में लिखा है कि मांस खाना मना है हमारे पूर्वज मांस नहीं खाते थे। गुरू नानक ने कहा कि आपके शास्त्रों में लिखा है कि यज्ञ के समय जानवरों की आहुति दी जाती थी। आर्य मांस खाते थे। तुम मांस खाने वालों से दान क्यों लेते हो?

गुरू जी ने मांस खाने या न खाने के बारे में कोई विचार प्रगट नहीं किया। उन्होंने केवल पाखंड का विरोध किया और कहा कि कथनी और करनी एक होनी चाहिए। गुरूजी ने कहा कि वह चीज कभी नहीं खानी चाहिए जिसे खाने से शरीर को कष्ट पहुँचे, रोग लगे व मन पर बुरा प्रभाव पड़े।

# जब गुरु नानक देव पानीपत आए

गुरू नानक पानीपत पहुँचे। शहर के बाहर एक कुएँ के पास डेरा लगाया और कीर्तन शुरू कर दिया। उस समय पानीपत में एक शरफ नामक मुसलमान फकीर रहता था। उस का चेला शेख ताहिर उधर से गुजरा और कीर्तन सुन कर वहां ठहर गया। यह सोचकर कि कोई मुसलमान फकीर हैं उसने मुस्लिम अंदाज में आदाब किया। गुरू नानक ने कहा "अलेख को सलाम" भाव "प्रभु को सलाम"। चेला कुछ परेशान हो गया और अपने पीर को जा कर उनके बारे में बताया और कहा कि वह कुछ उलटी सीधी बातें करता है। चेले की बातें सुनकर पीर ने कहा कि चलो इस मनुष्य के दर्शन कर के आएँ।

दोनों कुएँ पर आए। गुरू जी के दर्शन कर दोनों के मन को बहुत शांति मिली। पीर ने सलाम किया तो उसे भी गुरू जी से वही जवाब मिला जो चेले को मिला था। शरफ ने एक ही सवाल किया कि असली संत या दरवेश कौन है? गुरू जी ने उत्तर दिया जो बुरे कर्म न करे, किसी का दिल न दुखाए, कभी क्रोधित न हो, ईश्वर को न भूले, अपना हक पहचाने व दूसरे का हक न छीने वही असली पीर है। पीर ने गुरू का हाथ पकड़ कर चूमा व नमस्कार किया और कहा कि आप ने तो ईश्वर को पहचान किया है। सारे शहर में प्रचार कर दिया कि पीरों का पीर बाहर कुएँ पर बैठा है। लोग गुरू जी के दर्शन के लिए आने लगे। यहां लोगों को जीवन दर्शन समझा गुरू जी दिल्ली को चल दिए।
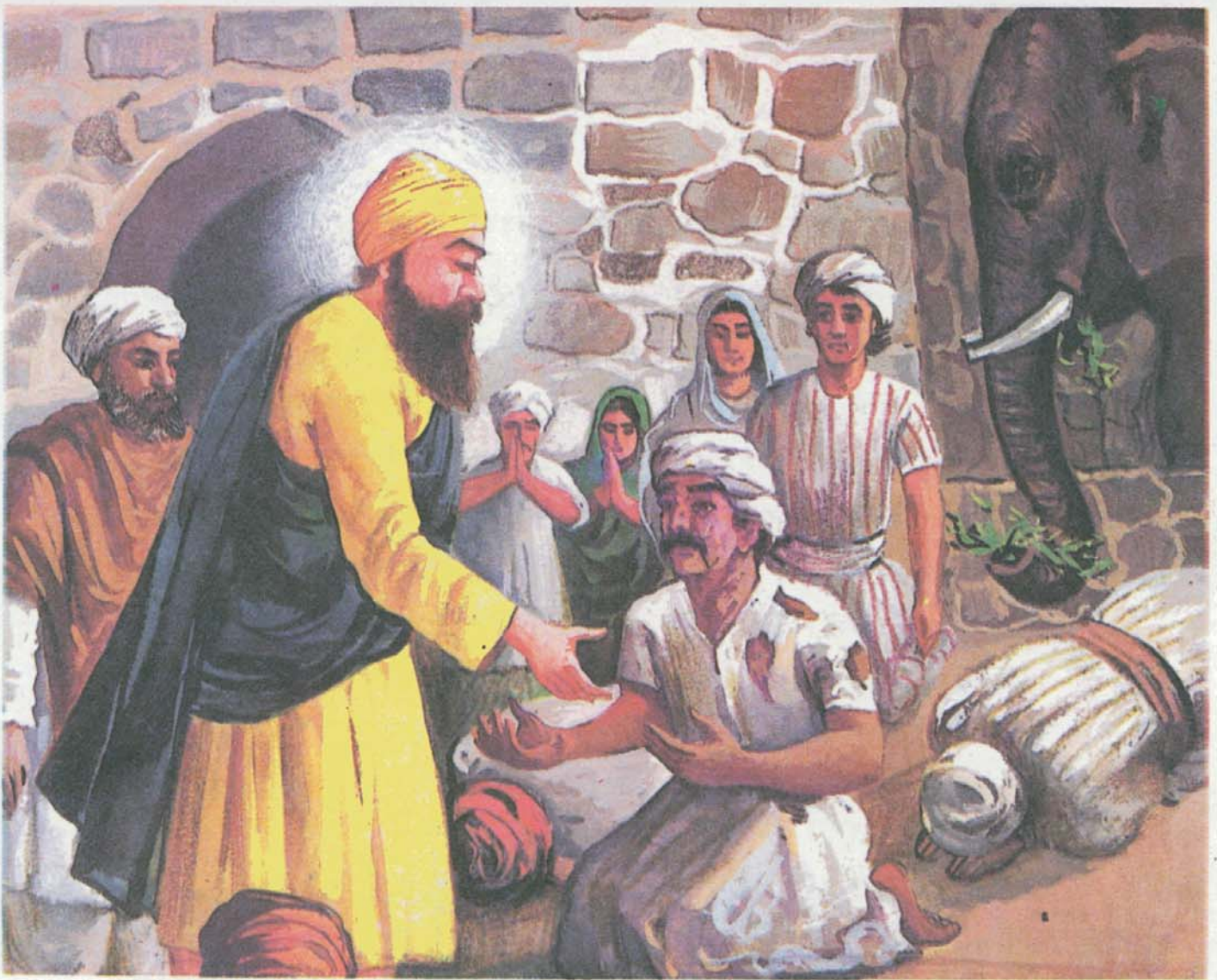
## दिल्ली में कौतुक

दिल्ली में गुरू नानक ने तीमारपुर व चन्द्रावल गावों के समीप यमुना के किनारे मजनूँ फकीर के डेरे के निकट अपना डेरा जमाया। बादशाह इब्राहिम लोधी का हाथीखाना निकट ही था। एक दिन वहाँ बहुत से लोगों के रोने की आवाज़ें आई तो गुरु जी ने मरदाने को पता लेने के लिए भेजा। मरदाने ने आकर बताया कि एक हाथी मर गया है, उसका महावत जो उसे चलाता और संभालता था वह व उसके परिवार के लोग रो रहे हैं। गुरु जी खुद हाथीखने गए व उस रोते हुए आदमी से पूछा कि क्यों रो रहे हो हाथी तो बादशाह का था व उसे तो एक हाथी के मरने से कोई फर्क नहीं पड़ता। उस रोते हुए आदमी ने जवाब दिया कि बादशाह हम पर गुस्सा करेगा व हमारी नौकरी जाती रहेगी। इस पर गुरु जी को तरस आ गया उन्होंने महावत को कहा कि मरे हुए हाथी के मुँह पर हाथ

फेरो और वाहिगुरु वाहिगुरु कहो। परमात्मा भली करेंगे। महावत ने इसी तरह किया और मरा हुआ हाथी ज़िन्दा हो गया। हाथीखाने के सभी लोग गुरु जी के चरणों पर माथा टेकने लगे।

दिल्ली में यह बात सब तरफ फैल गई और आखिर बादशाह इब्राहिम लोगी को भी पता लगा। उसने हुक्म दिया कि मर कर जिन्दा हुए हाथी को मेरे सामने पेश किया जाए। उस हाथी पर चढ़ कर बादशाह गुरु जी के दर्शन करने आया। बादशाह हाथी से उतर कर सलाम करके बैठ गया। गुरु नानक देव जी को उसने पहला सवाल किया "हे दरवेश हाथी को आपने जिन्दा किया है?" गुरु जी ने उत्तर दिया कि "मारने और जिन्दा करने वाला एक भगवान ही है, कोई आदमी नहीं। फकीरों की प्रार्थना पर भगवान दया करते हैं।"

बादशाह ने दूसरा सवाल किया "आप इसको फिर मार कर दुबारा जिन्दा करकेदिखाएँ।" गुरु जी ने बादशाह को फिर बताया कि मारने और जिन्दा करने की शक्ति केवल एक भगवन के पास ही है, और किसी के पास नहीं। भगवान के सिवा कोई दूसरा यह कर ही नहीं सकता। बादशाह की तसल्ली हो गई कि यह तो पहुँचा हुआ दरवेश है।

बादशाह ने नम्रता से पूछा कि मैं कुछ रूपए व वस्तुएँ भेंट करना चाहता हूँ, क्या आप वह स्वीकार करेंगे?

गुरु नानक देव जी ने उस समय एकश्लोक का उच्चारण किया जिस में कहा कि हम केवल भगवान के दर्शनाभिलाषी हैं और दूसरी किसी भी वस्तु की चाह हमें नहीं। केवल भगवान के नाम में लीन रहना चाहते हैं। यह सब सुन कर बादशाह इब्राहिम लोधी बहुत प्रभावित हुआ।

दिल्ली में उस स्थान पर जहाँ गुरु नानक देव जी आकर ठहरे थे वहाँ बहुत सुन्दर गुरूद्वारा बना हुआ है जिस का नाम मजनूँ का टीला है और आज भी यमुना नदी इस गुरूद्वारे की दीवार से टकरा कर बहती है।

# शेख बजीद

दिल्ली से गुरु नानक देव जी व मरदाना पूर्व की और चल दिए। कुछ दिन सफर करने के बाद एक पेड़ों के झुंड के नीचे डेरा लगा लिया। दूसरे दिन क्या देखते हैं कि छः कहार एक पालकी उठाए वहाँ आ रहे हैं। थोड़ी दूरी पर वह सब रूक गए। कहारों ने एक चादर ज़मीन पर बिछाई और पीर वहाँ लेट गए। सब लोग उनकी सेवा में लग गए। कोई बाहें दबाने लगा तो कोई पैर।

मरदाना हैरान हो गया। उसने गुरूजी से प्रश्न किया कि यह क्या है? जो पीर पालकी में बैठ कर आया है वह थक गया है और जो लोग पालकी उठा कर लाएँ हैं वे नहीं थके, उल्टा वे पीर की सेवा में लगे हैं। कृपा करके मुझे यह रहस्य समझाइए।

गुरु जी ने मुस्कुराते हुए कहा – "चलते रहने वाले स्वस्थ रहते हैं। उन्हें ज्यादा भूख लगती है। जो खाते हैं पच जाता है जिससे शरीर में ताकत आती है। और वह लोग जो बैठे रहते हैं, चलते ही नहीं उन्हें भूख कम लगती है खाना कम खाते हैं तो शरीर में ताकत नहीं आती और यदि ज्यादा खा चलें तो कुछ पचता नहीं इसलिए बीमार रहते हैं और जल्दी थक जाते हैं।"

मरदाने को कुछ समझ नहीं आया। उसने फिर दूसरा प्रश्न किया कि यह पीर तो बूढ़ा भी नहीं है और बीमार भी नहीं है। यह चलकर भी नहीं आया। इसे किस चीज़ की थकान है? गुरु नानक जी हँसने लगे, फिर मरदाने को समझाया कि इस पीर को दो थकान चढ़ी है। एक पिछले जन्म के हठ तप की थकान है वह सारा तप करामाती बनने के लिए करता रहा है। इस तप के फलस्वरूप इस जन्म में पीर फकीर बन गया है। यह आलसी हो गया है। आप कुछ नहीं करता। अपने आप चलता नहीं और मेहनत करनी भी छोड़ दी है। यदि यह व्यक्ति केवल ईश्वर को प्यार करे व लोक सेवा करे तो मन और शरीर दोनों तन्दरूस्त रहेंगे। इस तरह जीवन सफल हो जाएगा।
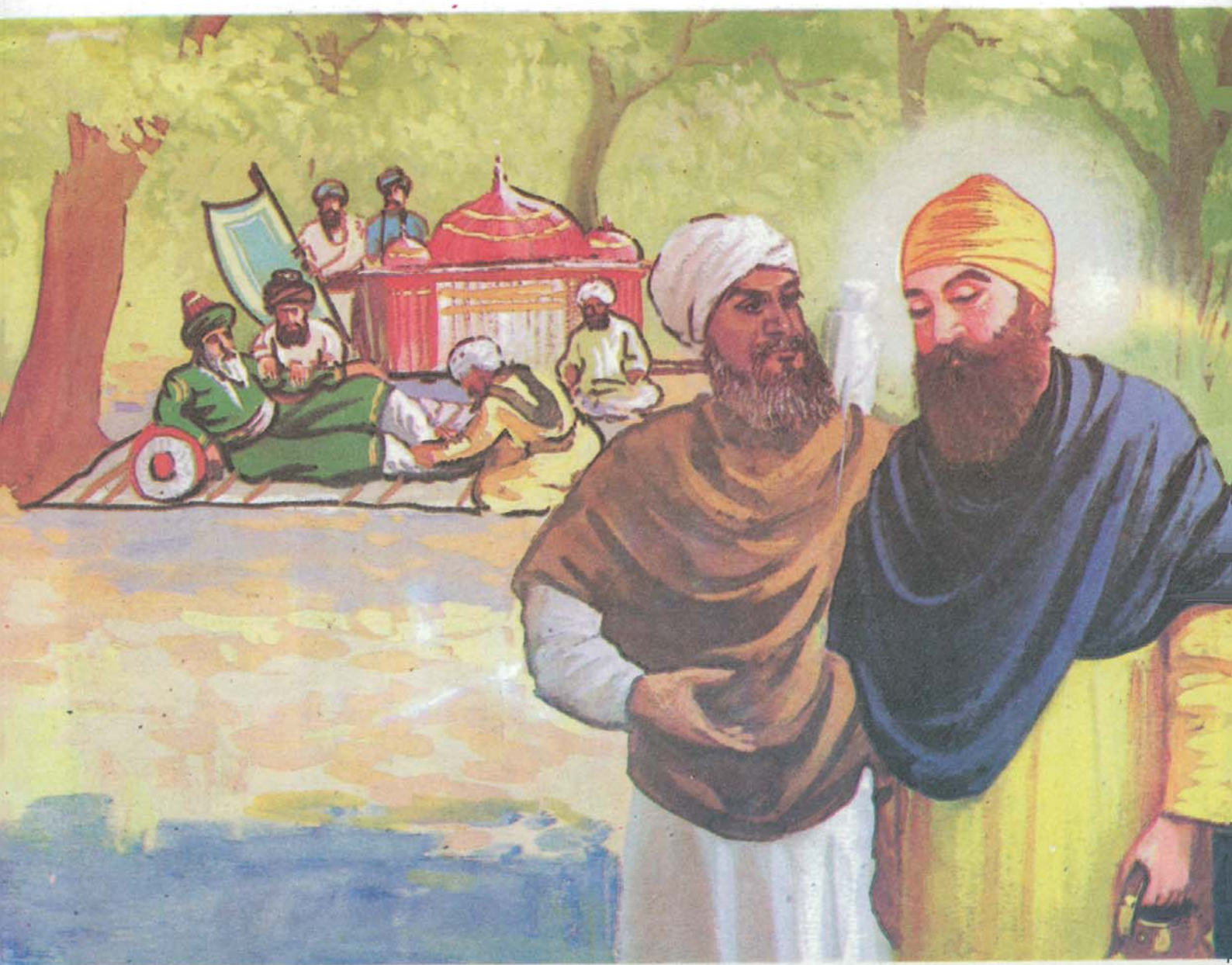
## जब गोरखमता नानकमता बना

गुरु नानक देव अपनी इस यात्रा में नैनीताल के पास गोरखमता पहुँचे। यह गोरखनाथ के शिष्यों, साधुओं व योगियों का बहुत बड़ा केन्द्र था। जितने हरे भरे पेड़ थे उनके नीचे साधुओं ने धूनियाँ लगाई हुई थी। गुरु जी एक सूखे वृक्ष के नीचे बैठ गए। शाम हुई तो गुरु जी ने मरदाने को साधुओं से कुछ लकड़ी व आग लाने को कहा। मरदाना गया परन्तु किसी साधु ने उसे लकड़ी या आग न दी। उसे काफी खरी खोटी भी सुनाई। उसने वापिस आ कर गुरु नानक को सारी बात बताई। गुरु जी ने उसे गुस्सा होने से मना किया। उन्होंने कहा "गुस्सा स्वास्थय
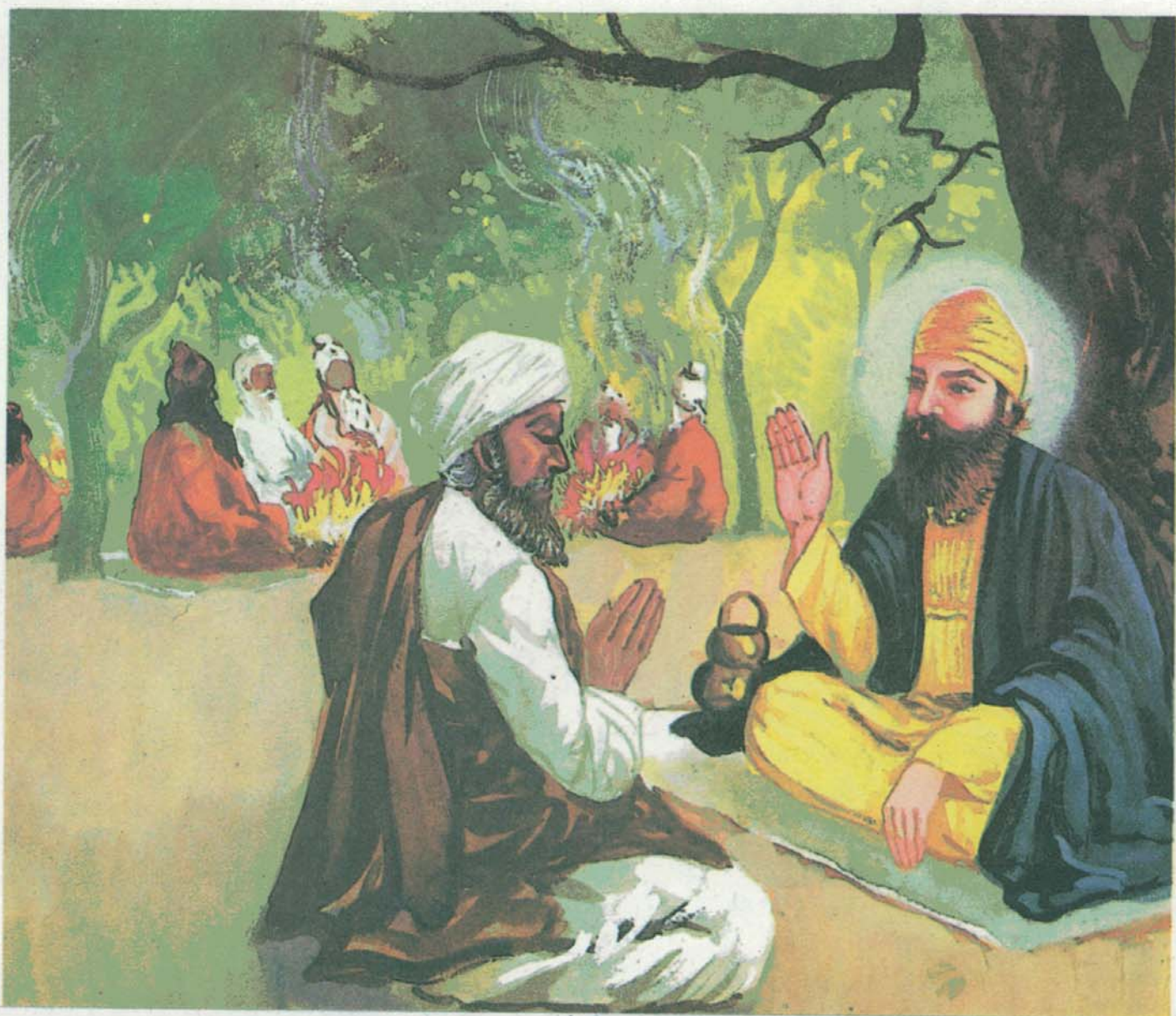
के लिए खराब होता है। अपनी सेहत मत खराब करो। ईश्वर तुम्हारी ज़रूरत पूरी करेंगे।" मरदाना सो गया। जंगल में से लकड़ी काट कर लाता हुआ एक आदमी वहाँ रूक गया। अंधेरा होने के कारण वह घर नहीं जा सकता था। वह गुरु नानक के पास आ कर बैठ गया। उसने लकड़ियों के गट्ठर में से कुछ लकड़ियाँ निकाल कर आग जला ली। दूर साधुओं ने गुरु नानक के पास आग जलती देखी तो बहुत शर्मिन्दा हुए। गुरु नानक उसी वृक्ष के नीचे बैठे कीर्तन करने लगे। कई दिन बीत गए। आसपास के गाँवों के लोग उनका कीर्तन सुन उनके पास आने लगे।

एक और अचरज भरी बात हुई। जिस सूखे वृक्ष के नीचे गुरु नानक बैठे थे वह हरा होने लगा। कोपलें फूटने लगी। अब साधुओं को भी यकीन होने लगा कि यह कोई साधारण इन्सान नहीं भगवान के खास दूत हैं। वह सब गुरु जी के पास आए और उनसे पूछा कि आपका गुरु कौन है? गुरु जी मुस्कुराए और बोले कि मेरा गुरु अकाल पुरख है जो सर्व शक्तिमान है।

साधुओं ने दूसरा प्रश्न किया कि आप योगी क्यों नहीं बन जाते? हमारे जैसा वेष क्यों नहीं धारण करते? गुरु नानक ने बहुत मीठे स्वर में उन्हें योगमत के सही अर्थ समझाए। उनसे कहा कि बड़ा योगी वह है जो सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुए प्रभु को हमेशा याद रखता है। यदि तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मुक्त हो जाओ तो असली योगी हो। सब साधु मान गए कि गुरु नानक कोई पहुँचे हुए महात्मा हैं। आस पास के गाँवों में भी धूम मच गई कि योगिओं के डेरे के पास आए महापुरुष नानक पहुँचे हुए इन्सान हैं। कुछ समय के बाद इस जगह पर गुरु नानक देव जी की यादगार बनाई गई और गोरखमता का नाम नानकमता हो गया।

## जब रीठे मीठे हो गए

गोरखमते से आगे एक भयानक जंगल था जो कि खतरनाक जानवरों से भरा पड़ा था। गुरु नानक देव जी ने नानकमते से करीब ४० मील दूर इन जंगलों के अन्दर जा कर डेरा लगा लिया और मरदाने को रबाब बजाने का आदेश दिया। एक दिन पूरा गुज़र गया। मरदाने को भूख लग आई। गुरु नानक ने एक वृक्ष की ओर इशारा किया और कहा जा उसका फल खा ले। मरदाने ने हँस कर कहा कि यह तो रीठे का पेड़ है और रीठा तो कड़वा होता है उसे कैसे खाऊँ? अगर खा लिया तो हज़्म नहीं होगा।

गुरु जी ने मुस्कुराते हुए कहा "मरदाने खा कर तो देख, बिना खाए इसके स्वाद और असर के बारे में कैसे पता लगेगा।" मरदाना हुक्म मान कर गया व रीठे तोड़ कर खाने लगा। रीठे तो मीठे व स्वादिष्ट थे। उसने पेट भर कर खाए व कुछ गुरु जी के लिए ले आया।

उस स्थान पर बाद में गुरूद्वारा बनाया गया रीठा साहिब, अब तक यात्री वहाँ से मीठे रीठों का प्रसाद लाते हैं।

# पंडित चतर दास सिख बना

गुरु नानक देव जी उत्तर प्रदेश के बहुत से इलाकों से होते हुए बनारस पहुँचे और शहर से बाहर नदी के किनारे डेरा लगाया। वहीं पर कीर्तन शुरू कर दिया। एक दिन एक विद्वान पंडित चतर दास वहाँ से गुज़रा और गुरु जी को देख कर वहाँ खड़ा हो गया। नम्रता से पूछा लगते तो आप साधु हैं पर सामने कोई मूर्ति नहीं, गले में तुलसी की माला भी नहीं। लगता है आप साधु बनने के पूरे तौर तरीके नहीं जानते।

गुरु नानक मुस्कुराए व उसको समझाया कि हम उस ईश्वर की अराधना करते हैं जिसकी कोई सूरत नहीं। जब स्पष्ट सूरत ही नहीं तो फिर मूर्ति कैसे होगी और मूर्ति पूजा कैसे होगी। इसके बाद उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें बुरे काम छोड़ने चाहिए। जब तक बुरे ख्याल, बुरे काम व बुरी बुरी बातों में ध्यान रहेगा तब तक मनुष्य प्रभु का सिमरन ही नहीं कर सकता।

पंडित चतर दास पर गुरु नानक के शब्दों का इतना असर हुआ कि वह सिख बन गया। उसने चरणों में माथा टेका और कहा कि मैं तो आपको सही राह पर डालने आया था मगर आपने तो मुझे एहसास दिला दिया कि मैं गलत राह पर था। इसी पंडित चतर दास ने बनारस में सिख संगत कायम की।
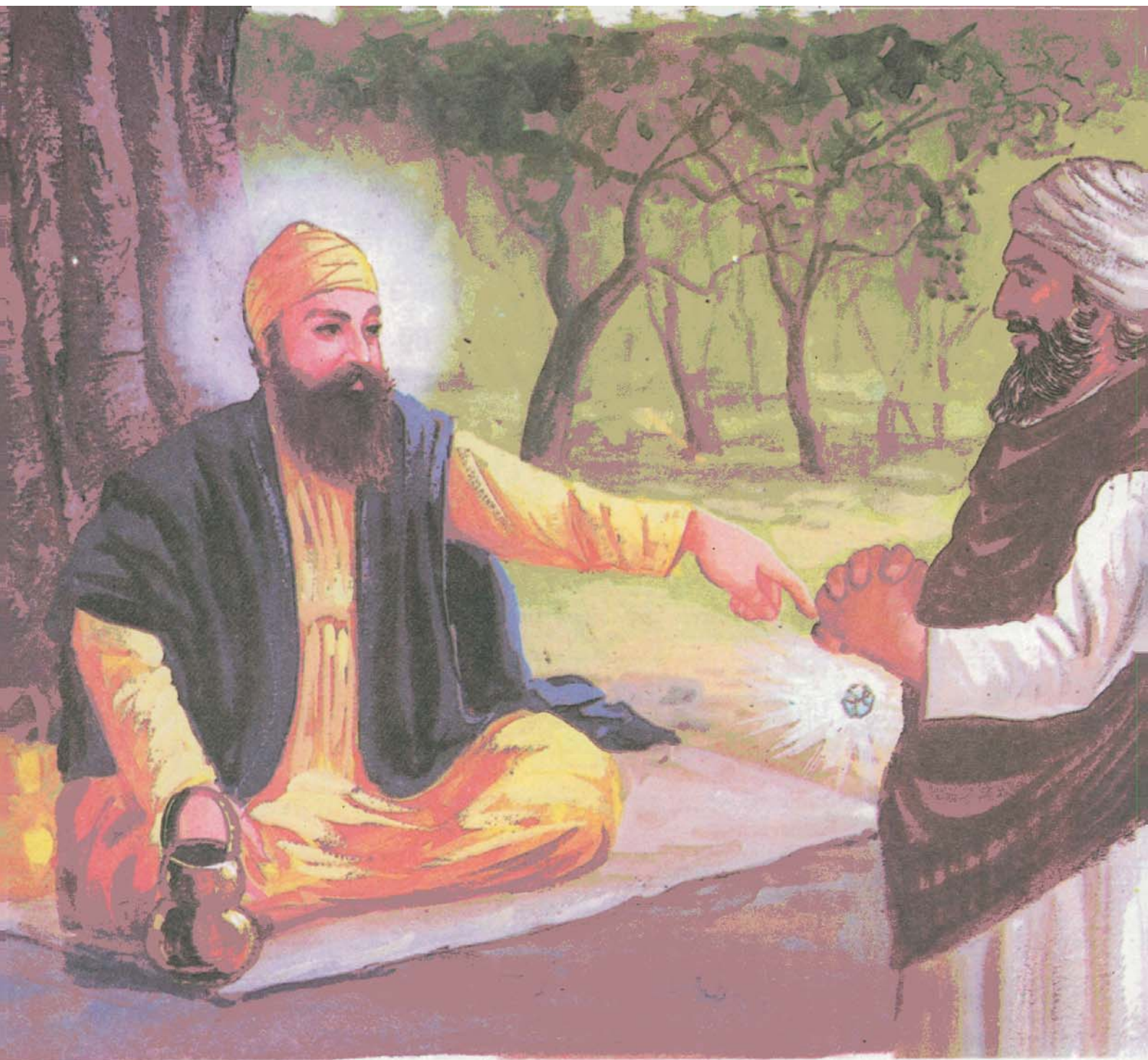
## गुरु नानक पटना में

बिहार राज्य की राजधानी है पटना। गुरु नानक देव पूर्व की उदासी के समय यहाँ आए और घने पेड़ों के एक झुंड के नीचे अपना डेरा लगाया। सांझ की वेला थी। कीर्तन करने के पश्चात् गुरु नानक व मरदाना सो गए। सुबह उठकर फिर कीर्तन शुरू कर दिया। मरदाने को भूख लगी थी। उसने गुरु जी से कहा कि शहर चलकर कुछ खाने पीने का प्रबन्ध करना चाहिए। गुरु जी ने मरदाने की ओर देखा और फिर एक छोटे से चमकते पत्थर की तरफ इशारा कर के कहा कि इसे

नगर में किसी हीरे जवाहरात के व्यपारी को बेच कर खाने की वस्तुएँ खरीद लाओ। मरदाना वह पत्थर ले कर शहर पहुँच गया। एक सब्ज़ी वाले ने उसका मूल्य एक मूली बताया। फिर कपड़े वाले ने एक गज़ खद्दर मोल लगाया। हलवाई दो लड्डू देने को तैयार हुआ। यूँ ही उसका मूल्य पूछते पूछते मरदाना सालसराय जौहरी की दुकान तक पहुँच गया। सालसराय ने पत्थर देखा और देखता ही रह गया। उसने कहा कि यह लाल हीरा बहुत कीमती है। इसका मूल्य नहीं आँका जा सकता। उसने यह भी बताया कि उसके पूर्वज कहा करते थे कि ऐसा अमूल्य हीरा भी होता है और यदि इसके दर्शन हो जाएँ तो सौ रूपए दर्शन भेंट होने चाहिएँ। इसलिए उसने सौ रूपए मरदाने को भेंट किए। मरदाने ने कहा कि उसका मालिक यह रूपए नहीं लेगा। मैंने तो इसे बेचकर खाने पीने का सामान ले जाना है।

सालसराय ने अपने मुंशी से कहा कि वह भोजन तैयार करके बताई हुई जगह पर जल्दी दे आए। मरदाना वह पत्थर और सौ रूपए ले कर वापिस आ गया और गुरु जी के आगे रख कर बोला कि शहर में किस तरह लोग इसका अलग-अलग मोल लगा रहे हैं। गुरु जी ने कहा कि यही पहचान का फर्क है। जौहरी ही इस चीज़ ठीक मोल पहचानता है। दूसरों के लिए यह हीरा भी एक पत्थर ही है। उन्होंने मरदाने को वापिस भेजते हुए कहा कि यह सौ रूपए वापिस कर के आओ। इन पर हमारा कोई हक नहीं है। और जिस वस्तु पर हमारा हक नहीं है उसे हम नहीं रख सकते।

# गया शहर और देवगीर

पटना से गुरु नानक गया शहर पहुँचे। इस तीर्थ स्थान के निकट ही राजगिरी नामक एक स्थान है जहाँ लोग पिंड दान करते हैं। जब गुरु नानक वहाँ पहुँचे तो पंडे उनके पास भी आए और पिंड दान करवाने को कहा। उन्हें बुर्जुगों की आत्मा की शांति के लिए पूजा पाठ करवाने के लिए ज़ोर दिया।
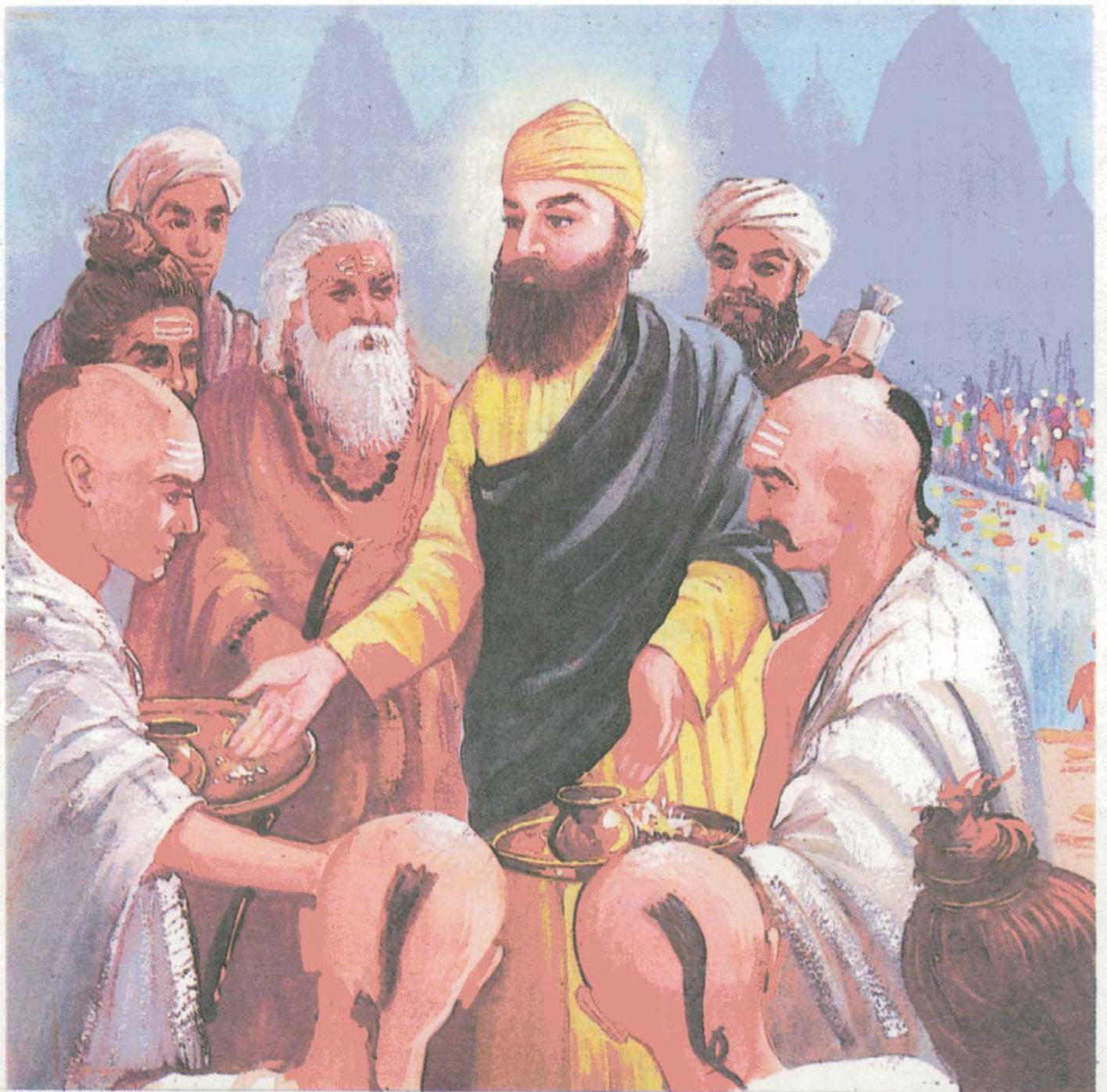
गुरू जी हँस दिए। उन्होंने कहा कि हमने पहले ही ऐसा कार्य कर लिया है जिससे हमारे बजुर्ग, साथी और हम सभी मुक्त हो गए हैं। हमने नाम का दिया जलाया है जो अज्ञानता के अंधेरे को दूर करता है। लोगों को गलत राह मत दिखाओ। सब को बताओ कि प्रभु हमारे अन्दर है। सदा हमारे साथ है व प्यार करता है। हमें भी उसे प्यार करना चाहिए। स्वर्ग नरक कुछ नहीं है। ऐसा मत सोचो कि बुरे कर्मों को क्षमा नहीं किया जाता। जैसे एक शोला लकड़ियों के ढेर को जला कर खाक कर देता है वैसे ही नाम सिमरन बुरे कर्मों का नाश करता है। अपने स्वार्थ के लिए लोगों को वह बातें न बताओ कि वह भटकते ही रहें। ईश्वर की कृपा के पात्र बनो जीवन सफल हो जाएगा।

सब पंडे गुरूजी की बातें सुनकर निहाल हो गए और सब ने माना कि गुरूजी का बताया राह ही ईश्वर से मिलाप करा सकता है। यहां से गुरू नानक बौद्ध गया पहुँचे। नगर के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठ गए और कीर्तन आरंभ कर दिया। लोग आर्कषित होने लगे। इन लोगों में महंत देवगीर भी था। वह गुरूजी के दर्शन करने आया। वह एक बहुत बड़ा विद्वान था और साथ ही बैरागी भी। उसने गुरू जी के साथ ज्ञान गोष्ठी की। गुरूजी ने उसे समझाया कि इन्द्रियों को नहीं मारना, मन को नहीं मारना बल्कि इन सब को बुरे काम करने से रोकना है। मन को नीच ख्यालों में नहीं ले जाना, अवगुणों का त्याग करना है और गुणों को अपनाना है। मन के प्यार को नहीं मारना। ईश्वर से प्रेम करना है।

इस एक मिलन का देवगीर पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह गुरू नानक देव जी का सिक्ख बन गया। सिक्खी प्रचार में अपना पूरा जीवन लगा दिया।

# रखवाले को बादशाह बनाया

गया से चलकर गुरू नानक और मरदाना राजौली गए जहां उन्होंने कल्लन शाह फकीर  से मुलाकात की। अगले सफर को जाते हुए वे एक खेत के पास से गुजरे। खेत में हरे चने की बहुत अच्छी फसल थी। खेत का रखवाला चने भून रहा था। यह देखकर मरदाने की भी इच्छा उन्हें खाने को हुई। वह गुरू नानक देव जी को उस खेत की ओर ले गया। दोनों खेत के किनारे बैठ गए। रखवाले ने उन्हें देखा तो उनके पास आ गया। उसने बड़े प्यार और श्रद्धा से वह चने उनके सामने रख दिए। मरदाने ने जी भर कर खाए। रखवाले ने उन्हें कुछ देर वहाँ बैठने को कहा ताकि वह घर से उनके खाने पीने को कुछ ले आए। गुरू नानक ने उसे मना कर दिया और कहा कि तुम्हारा प्रेम ही हमारे लिए पकवान है। उसने फिर भी घर से कुछ लाने का अनुग्रह किया तो गुरू जी के मुँह से से शब्द निकले "घर न जा, बैठ, हे सुलतान"।

कुछ समय बाद यह बात वाकई ठीक निकली, हालात कुछ यूँ हुए कि वह रखवाला उस जगह का राजा बन गया। राजा बनकर वह जीवन भर गुरू नानक का अनन्य सेवक कहलाया।

## मोहरों के कोयले और सूली का शूल

अपने सफर के दौरान गुरु नानक व मरदाना एक नगर में पहुँचे। बरसात का मौसम था। दोनों ने नगर के बाहर एक झोंपड़े में डेरा लगा लिया। नगर में एक प्रभु भक्त रहता था। जब उसने सुना कि नगर के बाहर एक महापुरुष आया है जो बहुत ही सुरीली आवाज़ में कीर्तन करता है तो वह उनसे भेंट करने के लिए चल पड़ा। उसे कीर्तन में इतना आनन्द आया कि उसने रोज़ ही आना शुरू कर दिया। वह प्रभु भक्ति में रम गया।

गाँव के एक दुकानदार ने उस से पूछा कि वह रोज़ कहाँ जाता है। उस भक्त ने बताया कि बाहर एक संत आया है जो बहुत अच्छा कीर्तन करता है। वह वहीं जाता है। दुकानदार भी उसके पीछे-पीछे वहाँ चल दिया। किन्तु रास्ते में भटक गया और बुरे लोगों के अड्डे पर पहुँच गया। उन्होंने उसे बुरे कामों में लगा लिया। उसे वहाँ खूब अच्छा लगने लगा और वह रोज़ वहाँ जाने लगा।

एक दिन दोनों फिर मिले। भक्त ने कहा मुझे तो कीर्तन सुनने में बहुत आनन्द मिलता है दुकानदार कहे मुझे तो और भी ज्यादा आनन्द आता है। दोनों ने ज्यादा आनन्द की परख करने का फैसला किया। दुकानदार निश्चित किए स्थान पर पहले पहुँच गया। खाली बैठे-बैठे उसने मिट्टी खोदनी शुरू कर दी। उसे एक मोहर मिली। मोहर पा कर लालच में आ गया। उसने और धरती खोदी तो एक मटका निकला। मटका कोयले से भरा हुआ था। इतने में वहाँ पर भक्त आ गया। उसके पैर में काँटा चुभा हुआ था। दुकानदार ने उससे कहा "देखा मेरी राह पर चलने से मोहरें प्राप्त होती हैं व तुम्हारी राह पर जाने से काँटे चुभते हैं। बहस छिड़ गई व समाधान के लिए दोनों गुरु नानक देव जी के पास पहुँचे।

गुरु नानक जी ने मुस्कुराते हुए बताया कि दुकानदार ने किसी को अच्छे काम के लिए एक मोहर दी थी इसलिए उसकी हज़ारों मोहरें बन गई परन्तु उसके हर बुरे काम के साथ वे कोयले में परिवर्तित होती गई। केवल वह मोहर रह गई जो उसने अच्छे काम के लिए दी थी। फिर उन्होंने क्षत्रिय भक्त से कहा कि तुमने पिछले जन्म में ऐसे कार्य किए थे कि तुम्हें सूली पर चढ़ना था परन्तु इस जन्म की भक्ति से वह सजा घटती गई और आखिरकार एक शूल बन कर चुभने तक की सज़ा ही रह गई। दोनों यह सुनकर गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

# ठगों को ज्ञान

जब गुरु नानक व मरदाना अगले सफर को निकले तो एक जगह उन्हें ठगों ने घेर लिया व उनसे कहा कि जो कुछ उनके पास है वह तुरन्त उन्हें दे दें नहीं तो उन्हें मार दिया जाएगा। मरदाना तो घबरा गया किन्तु गुरु नानक ने शान्त स्वर में कहा    हमारे पास तुम्हें देने लायक कुछ भी नहीं है। यदि तुम हमें मारना चाहते हो तो बेशक मार दो लेकिन हमारी एक बात मान लों। मारने से पहले आग ले आओ और हमें मार कर इस लकड़ियों के ढेर पर डाल के जला ज़रूर देना ताकि हमारे शरीर यूँही खराब न हों।

आग कहाँ से लाएँ।    एक ठग ने पूछा

हम आग लेने जाएँ और तुम पीछे से भाग जाओ बड़े चालाक बनते हो और बच जाना चाहते हो।

गुरु जी ने धीरज के साथ कहा कि वह दूर एक चिता जल रही है तुम वहाँ से आग ला सकते हो। दो जाकर आग ले आओ और दो हमारे पास खड़े रहो। उन्होंने ऐसा ही किया। ठग आग लेने को चिता के पास पहुँचे तो दो आत्माएँ शरीर धारण कर उनके सामने खड़ी हो गई। पूछने पर उन्होंने बताया कि यह जो लाश जल रही हैं एक अति पापी की है। इसने नर्क में जाना था परन्तु उस ईश्वर के प्यारे की नज़र इधर डल जाने से इसकी मुक्ति हो गई है। जिसे तुम मारना चाहते हों वह तो घोर पाप बख्श सकता है और पापियों को कड़ी सज़ा भी दे सकता है।

दोनों ठग वापिस आ गए और गुरु नानक के चरण पकड़ लिए। कीर्तन के प्रभाव से मन की मैल उतर गई और उन्होंने अपने पापों से सदा के लिए तौबा कर ली।